

2368

ASNA ARCHIVES

॥ उद्धि ॥

॥ १ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥

॥ परांशुशिरसाविष्णुत्रैलोक्याधिपतिं प्रभुमाणा

नाशास्त्रोद्धर्तवक्ष्यराजनीतिमसुचयम् ॥

१ ॥ त्रैलोक्यका अधिपति श्रीविष्णु

कननमस्कारगारिकन ॥ चान्दविश्वरत्नेनानाशास्त्रमाहेरिकनराजनीतिआग्या

गर्हन् १ ॥ अधितैर्वमिदंशास्त्रंनराग्यास्यथितान्य ॥ धर्माद्यदेसवितयैका

र्याकार्यसुभाशुभम् ॥ २ ॥ जोमनुष्यलेयोशास्त्रयहिमात्रयोधर्मयोअधर्मयोव

क्षियाकाम ॥ योद्यटियाकामयोगर्नयोनगर्नभतिज्ञानउद्यदसादिनाकोत्तामर्थः

होला ॥ २ ॥ तदहंसंप्रवक्ष्यामिनराजाहितकाम्यया ॥ येनयज्ञायुवर्धतेमात्रे

वाहितकारिनि ॥ ३ ॥ मनुष्यकोहितगर्नाकनचानकविश्वरत्नेआज्ञागर्हः

॥ चान्द

१

न॥ जसमनुषेलेयोशाखवृक्षलाविचारगदो॥ आमालेयोह्याऊंयोशाखलेयोह्या
ह॥ ३ ॥ मुलमुत्रपुवधामिचानकेननुभाषिती॥ येनयज्ञातमात्रेनसर्वज्ञत्वंहिजा
या॥ ४ ॥ चानकप्रपिलेआक्रायुत्रकनकहं॥ हेप्रवहोसुनयोसाखययाय
हि सर्वेन्यायानितिधर्मअधर्मसुभअसुभजान्याहु॥ ४ ॥ मुख्यशिष्योयत्र
सेनउस्ताखिभरनेनच॥ दिवतासीप्रयोज्ञासुयंरिउतायेवसिदति॥ ५ ॥ मुख्यसि
षेकनउयदेसदियाकोउस्ताख्यामिलाईगहनादियाको॥ शत्रुसितपितगन्याकोय
र्थहुं॥ ज्ञानियंरिउतभयायनिनासिंह॥ ५ ॥ गुराभिसहसंयकयंरिउतेस
हसंकथा॥ कलिभिसहमित्रत्यःकुर्वानानावसिदति॥ ६ ॥ गुराकमांहेसि

॥ बुद्धि ॥

तसंगगर्नुयैरिउतसितकथावातगर्नु ॥ कुलवंतसितमित्रलाउनुएतिगयायहि तो
मनुष्यकैरुयनिविर्गदेन ॥ ६ ॥ उन्मत्तानांभुजंगानांमथयानाचदतिना ॥ सि
नाराजकुलानांचविस्वासंतिगतायुध ॥ ७ ॥ वरुणासितसर्पसितमतवालासित
हाथिसित ॥ स्वास्मिसितराजकुलसितविस्वासगयाआयुघट्ट ॥ ८ ॥ वैरि
नांसहविस्वासंयोनरकनुमिहति ॥ सवृक्षागृषुसंसुप्तयतिगतयतिबुदेत्य ॥ ९ ॥
वैरिसंगजोमनुष्यलेविस्वासगर्ह ॥ लोमानिसहस्रकोनुयामानिशईरुषवातोय
स्यायहिनिदायाकोविबुद्धला ॥ १० ॥ धनधानेययोगेषुविआसंग्रहनेषुच ॥
आहारेष्ववहारेषुत्यक्तलजासदाभवेत् ॥ ११ ॥ धनकमाउदासाविआयप्रामा

॥ चान

२

घानामाव्यवहारगदीमायेतिथोकलज्जानमानु॥ ८ नगुरुसदसिमातानगु
हसदसिपिता॥ यस्तारंतिमाहोघोरं संसारोदधिदुस्तरं॥ १० ॥ गुरुजलिकाआ
मायनिहैनगुरुजलिकावावायनिहैनक्याहोभन्या॥ आमावाबुलोताजन्माविदिहै
नगुरुलेतासंसारसमुद्रतारिदिहै नूतसअर्थगुरुथुलोहून॥ १० ॥ मातागं
गासमुत्तिर्थयितापुस्करमेवच॥ गुरुकेदारसमुत्तिर्थमातागंगापुनपुन॥ ११ ॥
आमाभन्यागंगातिर्थजस्तैरुनवावाभन्यापुस्करतिर्थजस्तैरुन॥ गुरुभन्याकेदार
तिर्थजस्तैरुनआमालाईवारंगंगाफैमात्रु॥ ११ ॥ विआहयंकुर्यानांश्च
माहयंतयध्वीना॥ कोकिलानांस्वरंरुषीनारिहयंप्रतिवता॥ १२ ॥ ऊरुकोरु

॥ बुद्धि ॥

२

याविद्याहोतयश्चीकोरुयक्षमाहो ॥ कोकिलकोरुयस्वरहोस्त्रीकोरुयपतिवताहो ॥

॥ १२ ॥ नचाविद्यासमुर्वधुनचव्याधिसमोरिया ॥ नचायतनेसमरेहोनचदेवकलंव

लं ॥ १३ ॥ विद्याजतिकोआफुनुभाईमित्रहैनरोगजतिकोअर्कोसत्रुहैन ॥ होराजतिको

यियारोअरुहैनदेवजतिकोवालियोअरुहैन ॥ १३ ॥ विद्याप्रभासिनोमित्रभाय्या

मित्रगृहेषुच ॥ आनुरसेषधंमित्रधर्मयरत्रय ॥ १४ ॥ यरदेसकोमित्रविद्याहोद्य

रकोमित्रत्वास्निहो ॥ रोगकोमित्रश्रेयोधिहोयरदेसकोमित्रधर्महो ॥ १४ ॥ उराधि

तावृषीविद्याअजिर्गभोजनंवृषी विषंगोस्तिदरिदसेवृद्धसेतहारावृष ॥ १५

अभ्यासहोभ्यायद्विद्ययाकोविद्यायनिविषकुंछ नयच्याकोवायाकोअनयनिवि

॥ चान ॥

२

षड्दंष्ट्रं ॥ कंगालकोदायुभाईविषदंष्ट्रं बुछाकोतहनिस्वाग्निविषदंष्ट्रं ॥ १५ ॥
अनाभ्यासैहताविद्यानित्यहसैहतास्त्रिय ॥ कुविज्येनहताक्षत्रभृत्यदोषैहतानिय
॥ १६ ॥ अभ्यासछोयायद्विषयाकोविद्यानासिंह ॥ सदेहास्यायद्विस्वाग्निनासि
ह ॥ यूपटियायद्विषेतनासिंहसंविघटियायद्विराजानासिंह ॥ १७ ॥ यमपुत्रन
विहीस्वनेसुरेनचयेडित ॥ अधंकालंकुलंतसेनहचंदयसर्वरि ॥ १८ ॥ जस्कोः
होरावृद्धिगतयनिभयनयेडितयनिहैन ॥ तस्कोकुलअध्याहोहोचंद्रमानमयाका
राविजकोहो ॥ १९ ॥ शर्वरिधियकोचंद्रप्रभातरविदियक ॥ त्रैलोकेदियकध
र्मसुपुत्रकुलदीयक ॥ २० ॥ रात्रिकोदियचंद्रमाहादिनकोदियसुर्यहो ॥ त्रै

॥ उद्भि ॥
४

लोकेकोदियधर्महो कुलकोदियसुपुत्रहो ॥ १८ ॥ जनइगोयनेगाचजस्तविश्याय
यहति ॥ अनदाताभयत्रातायंचेतोयितरस्मृता ॥ १९ ॥ आपुजन्माउन्नायालना
गर्वाभयमारक्षागर्वाईयाचवावुभर्नु ॥ १९ ॥ गुरुयत्तिराजयत्तिः मित्रयत्तिः
तथैवच ॥ यत्तिमातास्वमाताचयंचेतोमातरस्मृता ॥ २० ॥ गुरुकास्त्रिराजकास्त्रि
मित्रकास्त्रि ॥ सासुआक्रामहतास्थितियाचआमाभनु ॥ २० ॥ लालययंचवर्षा
निदशवर्षानितादय ॥ संप्राप्तेषोदसवर्षेषुत्रिमित्रवदाचले ॥ २१ ॥ याचवर्षकु
न्यालसंमहाराकनलालनागर्नुदसवर्षस्मासनागर्नु ॥ स्वकुवर्षभयायद्विपु
त्रकनमित्रहमानु ॥ २१ ॥ लालनावहवोदोषातादनावहवोगुणा ॥ तस्मात्पु ॥ चान ॥

त्रंचसिषेचंतादयनतुलालय॥ २२ ॥ छोरकनसिष्यकनआफ्रसुससंगसेलनः
दियावरेवैगुणद्ध॥ तस्कारनछोरकनसिषेकनतादेनैगन्यागुणयद्ध॥ २२ ॥ रु
चभ्यासैयदिस्थातांप्रज्ञायाकिप्रयोजन॥ तावुभोयदिनस्थातांप्रज्ञायाकिप्रयोजन॥
॥ २३ ॥ जसमनुषेकोविप्रयद्रुनुमाइक्षाअभ्यासहुन्या॥ तस्कोज्ञानभयायनिक्या
नभयायनिक्यागर्ला॥ २३ ॥ पुत्रातुविविधिसास्त्रनियोग्णसतांतुधे॥ नीतिग्या
वुधिर्मयंचाभवतिखलुयुजिता॥ २४ ॥ ग्यानिमनुषेलेछोरकनशास्त्रयद्याउ
न्यागर्नु॥ शास्त्रजान्यायहिनितीजान्छनुवुद्धिहुहुमैवैलोकलेमानेगर्हु॥ २४ ॥ यठ
पुत्रकिमालसेमकतोयारभाहक॥ यठतपुजितोराजायथपुत्रदिनेदिने॥ २५ ॥ चा

॥ बुद्धि ॥

५

नकमृषिलोभाक्रयुक्कनभंछन्हेयुवहोयह्यय्यायडिसवैलोकलेराजालेमान्यगर्ह
न॥ नयस्यायडिभारिवोकिहरजोतिर्यानयर्ला ॥ २५ ॥ गुरोबुद्धयतायतनंकिमागोकि
प्रयोजन॥ विक्रियतिनघंथाभेमाभरडि रविवगीता ॥ २६ ॥ भलामनुषेलेगुरासिक
नुअलसिनहुनु ॥ गुरानहुन्यामनुषेलेगरुनालायायनिठुलोहुदेनअर्थातक्याहोभ
न्याबुद्धिगाईकनघंराठालाईदियायनिमोलमिलेदेन ॥ २६ ॥ नरस्याभरनंरु
यह्यस्याभरनंगुरा ॥ गुरास्याभरनंज्ञानज्ञानस्याभरनंक्षमा ॥ २७ ॥ मनुषेकोग
रुनाह्यहोह्यकोगरुनाज्ञानहो ॥ ज्ञानकोगरुनाक्षमाहो ॥ २७ ॥ गुराएहसिमाह
यंसिलंयहसिमाकुलं ॥ सिद्धियहसिमाविद्याभोगंयहसिमाधनी ॥ २८ ॥ ॥

॥ चान ॥

५

यद्धकिभानिस्वधनुगुणहकिभानिस्वधनुकुलवंतहकिभानिस्वधनु॥ विप्रायन्याको
हकिभानिस्वधनुधनहकिभानिस्वधनुषानुपिनिगहकिभानिस्वधनु॥ २८ ॥
अगुणसेहतंरुयंससिलसेहगंकुल॥ असिद्धिसेहताविप्राअभोगसेहतंधन॥ २९ ॥
गुणनहुन्याकोरुयव्यर्थहोशिलनहुन्याकोकुलव्यर्थहोसिद्धिनहुन्याकोविप्रव्यर्थहो
॥ दिनुषानुनसक्यायद्धिधनव्यर्थहो॥ २९ ॥ गुणानुषयतेरुयंसिलानुषयतेकु
ली॥ सिद्धिनुषयतेविप्राभोगीनुषयतेधनी॥ ३० ॥ रुयकोगहनागुणहोकुलः
कोगहनासिलहो॥ विप्राकोगहनासिद्धिहोधनकोगहनादानभोगहो॥ ३० ॥
सुकुलेजोजयतर्कन्यायुवविप्रानुजोजयत्॥ व्यसनेजोजयशत्रुमित्रधर्मानिजोज

॥ ७३ ॥

यात् ॥ ३१ ॥ कन्यादिनुव्यसकुलमाहोराकनसानेदोषिशाम्बुमालाउनु ॥ शत्रुकन
वियतिमालाउनुमित्रकनधर्ममालाउनु ॥ ३१ ॥ नात्पूचसिषरोमेरुनातिनिमन
रसातरं ॥ व्यवसाहिसाहायानां नातिपारोमहोदधि ॥ ३२ ॥ उपायलोतासुमेरु
यवतयानिअगुलोढेनयातालयनिगैरुहेन ॥ समुद्रयनियालहुनुसकिंछताका
रनगणानिलेउअमनहोडनु ॥ ३२ ॥ शोकनचहरदेनयादेनैक्याक्षरेनवा ॥
अर्वध्यादिवसंक्रुर्येदानाध्यायनकर्मनु ॥ ३३ ॥ अविहिन्नगयाएकसिरोकभ
यायनिएकेचरनभयायनि ॥ एकअक्षरभयायनियदैरहनुमदाअविहिन्न
गयायद्विप्रायालहुनुसकिंछ ॥ ३३ ॥ जोजनानांसहआनिवजुयातिथिः

॥ चान ॥

यिलिका ॥ अगद्वनैवैनापयोपियदमेकनगच्छति ॥ ३४ ॥ अभ्यासनद्वोप्यायद्वि
किमिलायानिरुज्जारोजनजोद्व ॥ अलसिभयायद्विगद्वद्वलेयनिकोतैजानुसक
देन ॥ ३४ ॥ सानिरथासनिविप्रासनिधर्वतमाहृहा ॥ सनिधर्मश्चकामश्चव्याया
मश्चशानिशानि ॥ ३५ ॥ धनकमाउदामाविप्रायर्दामायर्वतचर्दामाधर्मगर्दा
मा ॥ केहिउअमगर्दामाविस्मारगालिकामपुगद्वनंचारोगव्यालेकुंदेन ॥ ३५ ॥
गुरुसुसुषयाविप्रापुस्केरेनधनेनवा ॥ अथवाविप्रायांविप्राचगुथोनयलभेता
॥ ३६ ॥ विप्रायाउनुयोनिनिथोकलेयाउद्व ॥ क्याक्याभन्यागुरुकोसेवागरिभ
थवाधनादिकन ॥ कितविप्रांविप्रासातिचारथोकद्वेन ॥ ३६ ॥ एकाक्षेरंय

॥ बुद्धि ॥

दातारं यो गुरुनाभि मनेते ॥ स्थानयोनि सतंगत्या चोदने स्वयि जायते ॥ ३१ ॥
कै ग्वटा अक्षरय म्या उ न्या क न य नि जो गुरु मानेन ॥ सो स य जो नि कु क र भै के रि चां
हा ल भै ज न्म कुं ह ॥ ३२ ॥ पु रु क क प्र या धि तो ना धि तो गुरु सं नि धौ ॥ न सो भ ग तो
स भा म धे जा ल ग भ र्द व स्त्रि य ॥ ३६ ॥ गुरु छे उ न य रि पु त्र क मा वै हे रि य म्या
म नु षे क न ॥ स्व भा कुं दे न क स्व भ न्या जा ल ग भ र्द ॥ ३८ ॥ शि ल शि ल म न ल से
यं दि ते मि त्र सं ग्र हे ॥ अ चो र ह र न्य वि प्रायं चै त अ क्ष यो नि धि ॥ ३९ ॥ सि य सि
वा इ अ ना ल से भै ई शा सु य रु न्म मि त्र गु ल्या उ नु ॥ ए ति थो क व स्तु चो र ले चो रि
जा नु स क दे न अ क्ष यो ध न हो ॥ ३९ ॥ न हि जि न्म नि ज्ये ह्वा र्थे न ह्वा र्थे गुरु म् ॥ चान ॥

चो ॥ गुणा गुणानरं योति ययो दधि घृतं जथा ॥ ४० ॥ जन्मको ज्यथोन भनगु
राको ज्यथोज्यथो हो ॥ का हो भन्या डद दहि साको घि उज्यथो हो ॥ ४० ॥ किंकु
लेन विसालेन गुणावान पुजितो नर ॥ धनुवंस विमुधो यिनि गुणां किंक रियोदि
॥ ४१ ॥ वडा कुलमा जन्म भया लेक्या हुँ ह गुणा ज्ञान न भया कामनुषे ॥ धनु
वंस राजा का कुलमा जन्म भया यनि निगुणो को केहि प्रयोजन हेन ॥ ४१ ॥
किंकुलेन विसालेन विप्रा हिन तु केनर ॥ अकुलिना यि विद्या स्वदेवते रवि पुज्य
ते ॥ ४२ ॥ कुलवंगमात्र भया लेक्या प्रयोजन ह विद्वान भया घदि ॥ विप्रा भ
यात अकुलि भया यनि देवता कै गरिमा रहन् ॥ ४२ ॥ नावा यि भजते नाव

॥ बुद्धि ॥
८

यावत्पारं न गच्छति ॥ उत्तिर्गंधगते पारं नौ काया किं प्रयोजन ॥ ४३ ॥ विप्रारसमुद्र
को नाम एकै हो समुद्र न ता लिं ज्पाल नाम चाहि ॥ समुद्र ता व्यापि ना उ को क्वा प्रया
जन ॥ ४३ ॥ गुणा सर्वेति युज्यं त ए नृवं सो निरंथके ॥ वासुदेवनमस्याति वसु
देवनो ते जना ॥ ४४ ॥ समस्तथा उ मा गुणा युजा गर्ह न वा बुद्धे गभ न्या रुं देन क्वा
हो भ न्या ॥ श्री कृष्ण को सर्वे युजा गर्ह न वसुदेव को युजा को हि गत्ते न ॥ ४४ ॥ गु
णा कुर्वति उरत्वं उलो यिव सतां सतां ॥ केत कि गंध मा प्रायो स्वय गच्छति यत्त यदा ४॥
॥ ४५ ॥ गुणो कमनुषे राहा वस्या यानि सर्जन मनुषे हरु व हियु ग्ध न ॥ केत कि
फुल का वा सना या ईक न भव राते रुष मा पु ग्ध न ॥ ४५ ॥ विप्रा त्वं च नृ य त्वं च ॥ चान ॥
८

नाहि गुलेयराक्रम ॥ स्वदेसपुजितो राजा विद्यासर्वतपुजिता ॥ ४६ ॥ राजारवि
प्रायश्चाको वरोवरयराक्रमहुं देन राजा कन आफ्रा देसमासावेमान्यगई नं ॥
विप्रायश्चाउन्नाकनसवेथाउमा मान्यगई नंतस्काररा विप्रायलो हो ॥ ४६ ॥
एकैलापिमुपुत्रेन विप्रायुते नसाधुताकलपुरुषसिंहन ॥ चंडेनैवपकास
ते ॥ ४७ ॥ सुपुत्रविप्रावंतसाधुरस्मापुरुषसिंहले एकैपुत्रलेयानि ॥ चंडमाले
रात्रिपकासगण्डेकलकोपकासगई नं ॥ ४७ ॥ विप्रायांभाजनकश्चितकश्चि
द्व्येसेभाजनं ॥ उभयोभाजनकश्चितकश्चितनोभयभाजनं ॥ ४८ ॥ कोहिम
नुषेकोविप्राकोभाडाहन्कोहिमानिसधनकोभाडाहन् ॥ कोहिमनुषेहउ

॥ उक्ति ॥

उद्भोक्तुं को हि मनुष्ये उचिष्यात् पथौ कंठं न ॥ ४८ ॥ नमंति कनिनो रक्षातमं
 निगुणिराजना ॥ शुक्लं चैव सुवर्चं च भिद्यते ते वनं मेते ॥ ४९ ॥ कलकल्याको नमृत
 कुंठसजनयनिनाम्रितकुंठ ॥ सुक्याको काठरसुवर्चवरेवरद्वहभागहनम्रितकुंठेन
 ॥ ४९ ॥ नहिकर्मानि चारिसे ध्याकालेष्योजयेते ॥ आहारमेधुनं निडातथास्या
 ध्यायमेव च ॥ ५० ॥ एतिथोक्तकामसंध्याकालमानगर्नुक्याक्याभन्या आहार १
 । स्त्रीसंभोक २ । निडा ३ । यदु ४ ॥ ५० ॥ आहारजायो व्याधिगर्भावेकचक्षुजाय
 ते ॥ अलस्मिकश्च शैर्ष्यायां सपाठादायुर्वर्धये ॥ ५१ ॥ संध्याकालमासायां रागि कुं
 ठस्त्रिसंभोगगत्याकुपुत्रजन्मकुंठ ॥ निडागत्याधननासकुंठयाथगत्याआयुघट्टकुंठ ॥ चान ॥

॥ ५१ ॥ वेदवेदांगंतत्त्वज्ञजयहोमस्तथायराणा ॥ आसिर्वाद्यदोनिर्गमेवराज्ञपुरोहितः ॥
॥ ५२ ॥ वेदवेदांगंतत्त्वज्ञान्याजयहोमस्तथाज्ञान्या आसिर्वादिदिदैरहत्या ॥ एकावात्मरा
कनराजारेपुरोहिततुल्याउनु ॥ ५२ ॥ प्राज्ञनिग्धोमहियालछिद्रकर्मविवर्जित ॥ विधुले
चप्रयत्नांगिसमउद्यसमसुय ॥ ५३ ॥ ज्ञानिकोमलक्षानुकामनगर्णोआयद्विदर्शमाणा
गगर्णो ॥ सुषडुषवरोवरमान्याएकाकनराजातुल्याउनु ॥ ५३ ॥ कलसिलगुरायेतस
पधर्मयरायन ॥ प्रविर्नयेसरोदक्षेराजाधिष्ठाविधियते ॥ ५४ ॥ कलशिलगुरां
वतधर्मात्मासत्यवादिचतुरविचक्षनि ॥ क्षेमावतसवैसामर्थलेजुक्रनूपाकोएकाक
नराजातुल्याउनु ॥ ५४ ॥ कलविस्मृतिनेलुवधमयगर्णामताजय ॥ अनाव्ययकर्तालीना

॥ कुट्टि ॥
१०

ठियत्यनियोजयत ॥ ५५ ॥ लिताहाजुवा-यालोभिअग्यानि कयति नाहाक मावच
गर्गो ॥ आमसानि नहेरिय चर्गर्गो यत्ता कनराजानगुत्पाउनु ॥ ५५ ॥ सुत्तवृत्तिहि
तोधि रसर्वरत्नयलिक्षक ॥ सुचिश्चवसाहिश्चधर्माधि क्षेविधिधियते ॥ ५६ ॥
केहिकार्जभयायनिनिदानगर्गो ध्येज्यवंतसर्वे रत्नकोय रिक्षाजान्या ॥ व्यवसाहि
सुचिस्साकनविचालिगुउनु ॥ ५६ ॥ आयुवदकृताभ्यासे सवरत्नय रिक्ष
क ॥ आर्यमिलगुणोयेतस्यवैश्रविधिधियते ॥ ५७ ॥ कालज्ञानव्यदागजान्या
नारिकोयलिक्षाजान्यासर्वैसितमिलन्या ॥ शिलसोभाववठियभयाकोरत्ताक
नवैश्रगुत्पाउनु ॥ ५७ ॥ पित्रिपितामहोदक्षेसात्त्वज्ञमित्रयांचक ॥ शुचिश्चक

॥ चाना ॥
१०

थिनश्चैवसुयकालयससेते ॥ ५८ ॥ धातुवराज्येदेषिविचक्षणसास्त्रज्ञान्या ॥ मि
थोगरियकाडन्यास्त्वाकनभान्यागुल्याउनु ॥ ५८ ॥ सकिदुमिरुहिनाथोल
घुहसोजिताक्षर ॥ सर्वसास्त्रसमालोकेस्पलेयकउच्चैः ॥ ५९ ॥ एकैव्यर
मुनिमात्रअर्थवुद्ध्याचोडोलेषज्जराप्रअक्षरगर्भा ॥ सवैशास्त्रज्ञान्यास्त्वा
कनघरिदारगुल्याउनु ॥ ५९ ॥ ईक्रीताकारगन्धशवलनकतपियदर्शन ॥ अय
मादिसदादक्षप्रतिहारकउच्चैः ॥ ६० ॥ काजकोअनुसास्त्रज्ञान्यावलियोसवै
सितमिलन्या ॥ हेरिकुरानगर्भाअतिचर्तुभयाकोस्त्वाकनहरिदारगुल्याउनु
॥ ६० ॥ समन्तकृतसास्त्रज्ञयैरिपुतश्चजिनाश्रम ॥ धर्मेसुर्ग्यगुणोयेतमेना

॥ उद्दि ॥

११

धिक्षाविधियते ॥ ६१ ॥ हर्ता कर्ता सप्तमर्थसर्वे सास्त्रज्ञान्याविचक्षणपरिश्रमभ
याको ॥ धिर्ज्येवंतसुरेभयाकोरस्ताकनकाजिनल्पाउनु ॥ ६१ ॥ समस्तहयसा
स्त्रज्ञवाहनधराजित ॥ शौर्योविष्येगुरोपेतअस्वधिक्षाविधियते ॥ ६२ ॥ स
र्वेघोडाकोयारिक्षाज्ञान्याघोडाकोव्यवहारज्ञान्या ॥ पुरेगुरावंतस्ताकनअस्व
वालिनल्पाउनु ॥ ६२ ॥ मेखाधिवीयतप्राज्ञपरिचिंतयलिखक ॥ धिरोयथो
कथादिचयेयउतोविधियते ॥ ६३ ॥ बोलिव्यसज्ञान्याभर्काकोमनबोधगः
न्या ॥ धिर्ज्येवंतभयाकोकुरावथार्थगर्णास्ताकनउकिलनल्पाउनु ॥ ६३ ॥
पार्थिवस्यभक्त्यसेवदामिगुरास्तक्षन ॥ एतसर्वधेयराजाभांडागामिस्तथैवच

॥ चान ॥

११

॥ ६४ ॥ राजालेचा करको गुरात नक्षन विचार गदीसा ॥ जेसे राजा कनव ठाडू
त्यो भंडारि गनु ॥ ६४ ॥ अतय वकुलिनानांदया कुर्वीति संग्रह ॥ आदि मध्यावसा
ने पुनते यास्येति वि क्रिया ॥ ६५ ॥ एकातर हसित कुलवंत घोजिका मसालाउ
नु ॥ त्यामानि सकहे देयानि विगदेन ॥ ६५ ॥ यें लिउते पुगुणा सर्व सुख सेवातु
के वदा ॥ तस्मात्त सुख सहस्रेभ्यः प्राप्य कथं समेत ॥ ६६ ॥ जानियें लिउत मनु
षेक्षेउ सर्वे थोक गुराऊं सुखेउ सर्वे थोक वय गुराऊं ॥ तस अर्थ हजार सुख
होडि जानि एक साथालिनु ॥ ६६ ॥ प्राज्ञानि योज्यमान्यनु संति रास सुखे गुरा
॥ यमे स्वर्गनिवास पुच्छर थधरी गमे ॥ ६७ ॥ जानि जनकन काज मालाया

॥ ७६ ॥

१२

याहि ॥ राजाकातिनगुणप्राप्तहुंछजसवठाउछस्यगवासयाउछलाहिमिगुडिहुंछनः
॥ ६७ ॥ नुप्यन्यवज्यमानेनुवयोदोषामहियेते ॥ अयसश्चाथनाशश्चनरकेया
नेधुव ॥ ६८ ॥ मुंयकनकाजमालायायाहि ॥ राजाकनतिनिदोषप्राप्तहुंछ ॥ अय
जसयाउछलहि ॥ हिमितासहुंछयरवनरकवासहुंछ ॥ ६९ ॥ तस्मात्तुमिभ्वरोमा
न्यधर्मकामाधाविधय ॥ गुणवतनीजोयनगुणाहिनविकर्जयत् ॥ ७० ॥ तसमर्थ
राजालेधर्मकामधनवठाउनाकनानिमित्रले ॥ गुणवतमविहेरिकजमालाउनु
गुणानभयाकनहोहुनु ॥ ७१ ॥ यताकिंचितकुहतेभूतेषुभंवायदियाभुभं
तेनसर्वहतेराजासुकिंतेउम्हतेरवि ॥ ७२ ॥ गुणवतकाजमालायायाहि ॥

॥ चान ॥

१२

भाभुभकाज ॥ उपागरोत्तायनिगजकनलास्मि वृद्धि कुं ह न ॥ २० ॥ यथा हे मय
रिक्षेतेतायमादनक्षेदेने ॥ तथा पुहृषयतेवचकुलसिलेनकर्मना ॥ २१ ॥ अ
स्तोमुनकोयारिधाभागासायोलि ॥ रिघनलेथिचिहे ह न ॥ तस्मैगरिकुलस्वभा
वकर्मलेसनुव्यकोयलिधागर्नु ॥ २२ ॥ आतयय ॥ विरापभृत्पावाधयोवेस
णागमे ॥ आयत्कालेतथासिचंभाय्योचविभवक्षय ॥ २३ ॥ सेवकोनिकोन
निकोकाप्रयथाईहेनुइकासिचंहेनुवियतिमा ॥ तस्मैवियतिमासिचंहेनुकीगा
लहुदास्त्रिआफ्राहकिंहेनभानिहेनु ॥ २४ ॥ भृत्पावहुविधाराजानुतमां
धममधेम ॥ तेनियोय्यथजोपमस्त्रिविधेयैकर्मसु ॥ २५ ॥ निकोनः

॥ ७३ ॥

७३

स्व. १३

निकोसेवक ठेरेतरहकाहुं हूतस्मात्भलाभनुयेकनभलाकाजमालाउनु ॥ मः
दोकनमदेकाममालाउनु मधेमकनमधेमकाममालाउनु ॥ ७३ ॥ आलसे
सुरं कुलं संवयसनिनें सता ॥ असंनुलामनगतंचो जे भूपनराधिये ॥ ७४ ॥
अलसिकुरालाउन्यालिसाहाद्विचरो जुवायालोभि ॥ अहंकास्मि असंतोषि
यकाकनराजाले छोडनु ॥ ७४ ॥ त्यजस्वामिनमंनुयं मनुज कयनं ते जे न
॥ कयनादविसेतचतस्मात्कृतनासनं ॥ ७५ ॥ आतिउयरागाकनयनि छो
डनु कयनिरागाकनयनि छोडनु ॥ योकार्जुनिकोभनितजान्यारागाकनयनि
छोडनु ॥ एस्मानिस्लेयतिगण्योभनितजान्यारागाकनयनि छोडनु नहोया

॥ चान ॥

७३

यदि नासहोला ॥ २५ ॥ वामाभार्या सुतो मुखे प्रथको वागनिचास्क ॥ निधने
होव धुवर्गश्चित्ते जे देस मरु सुख ॥ २६ ॥ प्रितिन भयाकाखि मुखे होरो अत्या
याको कामनगर्ग्यो सेवक रति थोक ॥ होदिया यदि सुख कुंछ ॥ २६ ॥ नकचि क
श्चित् सो मित्र नकचि कसे चित प्रिय ॥ कारणा देवता येते मित्रानि रिवंसाथा ॥
॥ २७ ॥ कसे को कोहि मित्र छैन कसे को कोहि प्रियारो छैन ॥ कार्ये कारन मा
सजुयनि कुंछन् मित्र यनि कुंछन् ॥ २७ ॥ कार्यार्थि भजते लोक न लोक परमा
क्षक ॥ वास शिरक्षये हस्त्या यानि जति मातरं ॥ २८ ॥ आह्वय काज मौका नि
मित्र सर्वे प्रेम हर्ष कानि मित्र कोहि प्रेम छैन ॥ कस्य भण्डा दुदथा कया यदि गाई

॥ उक्ति ॥
१४

कनवाछालेछोडहुंन॥ ७८ ॥ कुतोव्यसनिगोनिडाआदिप्रसेकुतोरति॥ कुतोसो
व्यंदरिइस्यउर्जनसेकुतोक्षमा॥ ७९ ॥ गुवायाहिनाहायाकननिडांलागदेन
सोवनिभयारतिकोहोला॥ उर्जनकोकेलाययायहिक्षमाकाहाहोला॥ ८० ॥
तत्करसेकुतोमान्यउर्जनसेकुतोक्षमा॥ व्यत्यास्त्रिनीकुतोहनेहोकुतोसो लुका
मिना॥ ८० ॥ चोरकोकाहामानहोलाउं देनउर्जनसेकुतोक्षमा॥ व्यत्याछे
उस्नेहउं देनहिनाहायासेउमत्यउं देन॥ ८० ॥ उर्वलेसेवलोराराजारा
नोहथिपानी॥ वलंमुर्धस्यमेनत्वंचोरानानत्वंवलं॥ ८१ ॥ निर्वलकोवलराजा
होवात्यकोवलरुनुहो॥ मुर्धकोवलनवालिरहनुचोरकोवललवालिकुरारुनु॥ ८१ ॥

॥ चान ॥
१४

अनाथानादरिडानीवालवृद्धितपश्चिना ॥ अन्धाययलिभुगानांसर्वेषांयथिवोगतिः ॥
॥ ८२ ॥ अनाथकोदरिडकोवालखकोवृद्धाको ॥ अन्धायलेमान्याकोरुतिकोवलराजा
होअरुजातिकोहिहेन ॥ ८२ ॥ व्याधितस्याधिनस्यसत्रुभिर्मित्रयांचक ॥ हृदयस्व
कदग्धश्चसुहितदर्शनमोषधं ॥ ८३ ॥ रोगिकनधननासभयाकनसत्रुलेडुयदि
याकन ॥ हृदयमासोकलेदग्धभयाकयाकनश्रोत्रादिइत्तामित्रकोमुषहेनु ॥ ८३ ॥
आतुरेव्यमेन्यप्राप्तेडुभिक्षेशत्रुविगुहे ॥ राजदारेस्मसानेवायस्तिषाष्टिसवाधया ॥ ८४ ॥
रोगिभैर ~~कौर~~ कौर ह्यामाधानुनकुदामा ॥ शत्रुसिताविरोधयस्यामास्तमा आः
प्रासाथमारह्याकनभाईभनु ॥ ८४ ॥ भावसुद्धिमनुष्यानांशातव्यसर्वकर्मसु ॥

॥ ७५ ॥

१५

भावे तच्च विताकांताभावेन उद्दिता नना ॥ ८५ ॥ मनुष्ये ह ह के हिका मगर्दमाय निभाव
नाले भुभं ह भनि जानु क सो भन्या ॥ स्त्रिको मुख चं स्य ना क्वा भाव ले ग र्द न्दो रा को मुखं
स्य ना क्वा भाव ले ग र्द न ॥ ८५ ॥ न देवो विदेते का स्त्रे या वा ने न च मृ न म य ॥ भावेषु वि
देते देवास्मात् भाव म ह त रं ॥ ८६ ॥ काठ माय नि मा तो मा य नि दे व ता ह न भाव ना मा
देव ता ह ॥ त स्का र न भाव ना चा हि ह ॥ ८६ ॥ शिष्या नां देव ता चा र्थे ज्ञान मा चा र्थे दे
व ता ॥ देव ता यो वि ता भर्ता ब्रा ह्म णा ज न देव ता ॥ ८७ ॥ शिष्य को देव ता गुरु गुरु को
देव ता ज्ञान ॥ स्त्रिको देव ता त्वा मि स वै को देव ता ब्रा ह्म णा हो ॥ ८७ ॥ विप्रं य से ज था व हि
मा चा र्थे य स्य देव ता ॥ य धिं य स्य य था मा ता मि त्रं य स्य य था सु त्र ॥ ८८ ॥ ब्रा ह्म णाः ॥ चान ॥

॥ चान ॥

१५

कनअग्निहैमानुगुरुकनदेवताहैमानु॥ आमाकनदृष्टिहैमानुमित्रकनछोरहैमा
नु॥ ८८ ॥ गुरुहृदिजातिनांवनावास्मरागुरु॥ यतिलेकोगुरुस्त्रिनांसर्वस्याभ्या
गतोगुरु॥ ८९ ॥ वास्मराकोगुरुअग्निहोचोस्त्रिगतकोगुरुवास्मराहो॥ त्रिकोगुरुः
स्वामिहोसर्वेकोगुरुअभ्यागतहो॥ ९० ॥ उतमस्याधिवर्गस्यनिचोपिगहमाग
त॥ पुजनियोयथान्यायसर्वस्याभ्यागतोगुरु॥ ९१ ॥ उतमजातिभयाघरमायनि
नीचाजातिअभ्यागतआयायहि॥ पुर्जागुरुगुडयड्क्याहोभन्यासर्वेकोगुरुअभ्यागत
हो॥ ९२ ॥ देवतापुजयभक्ताभ्यादानेनपुजयत॥ सुदपुजायकारेनविप्राणांम
धिवंधनं॥ ९३ ॥ देवतापुजागर्नुभावलेसेवकलिहाउनुधनदानगरि॥ सुदलि

॥ ७५ ॥

१६

रचन

६
आउनुडयकागरिवास्मराकोपुजागर्जुनमस्कारगारि॥ ८१ ॥ धर्मस्यमुलराजानं
तयोमुलंचवास्मरा॥ वास्मरायतपुज्येतानधर्मसन्नातरं॥ ८२ ॥ राजाकामुलधर्म
वास्मराकोतायस्याहो॥ वास्मराआहरगारिआहापुजागहवाहाधर्मरहंछ॥ ८२ ॥
आचारेकलतेधर्मसाचारेकलतेधन॥ आचारेकलमाप्राप्त्याचारेहंतलक्ष
नं॥ ८३ ॥ नेमनेस्नागारिकनधर्मकलहुंछनेमनेस्नागारिधनयनिरहंछ॥ नेमने
स्नागारिसर्वकलचाहुंछनेमनेस्नागारिअलक्षनंजोछ॥ ८३ ॥ भोजेभोजनश
क्तिश्चरतिसक्तिर्वचस्त्रिय॥ विभवेदानशक्तिश्चनारुप्यतयसकली॥ ८४ ॥ धान
चिजसंपुर्णछधानाकोसामर्थहैन॥ स्त्रियसरतिकोसामर्थहैनधनछदानगर्ना

॥ धान ॥

१६

कोसामर्थद्वेन॥ सतिथोक्तयस्याफललेहुं॥ २४ ॥ बालेचैवचलेधर्ममनि
त्यस्यैवतुजिवितं॥ फलानांमयियकानाशासुतंयतनीभव्यात॥ २५ ॥ बालवदेसि
धर्मकोचचागरिरहुनुयोसंसारअनिपद॥ कणोभन्यायाकोकोफलस्यसादिन
समराभनिथाहाहुंदेनतसमर्थमनकोयनिथाहाहुंदेन॥ २५ ॥ सताभवह
नोधर्मकोधनेवहातया॥ अदन्तेनहतांशानंयमादेनहतांसुता॥ २६ ॥ अहंका
लगत्याधर्मनासिंह्रिसाहभयातयस्याकोनासहुं॥ रुद्राभयाज्ञानहुंदेनयु
नानिभयायद्विययाकोशास्त्रयनिनासिंह्रन्॥ २६ ॥ अदिपुस्यमग्निहता
होमहताभुक्तिरसाचिका॥ उयजिगाहताकन्यास्थार्थयाककृयाहता॥ २७ ॥ न

॥ बुद्धि ॥

१२

वत्स्याको आगो मा हो मग न्या को व्यर्थ हुं ह सा हि न भैया या को अनव्यर्थ हुं ह ॥ दोहारे
 वर्चगारिके न्यादान ग न्या को व्यर्थ हो आ प्रौ मितय का या को अनव्यर्थ हुं ह ॥ १७ ॥
 दहिड्या धिड्या मिर्व धन वे सना नेच ॥ अदा गु फलाने नाति तस्मात्तदानवी सेव
 ते ॥ १८ ॥ पूर्वजन्ममादान ग न्या को फलाने दारिड्र हुं ह वी धन या ड ह ॥ तस्का
 एनदान धर्म गर्नु ॥ १९ ॥ पुत्रयका इव धान्य पु पुत्रिका इव जंगु पु ॥ ता दसा स्त्रै म
 नुषे पु यच धर्म व हि कृता ॥ २० ॥ धर्म मारति न भया काम नुषे क सो भन्या धानका
 य पुता जस्तो ॥ जंगु मा को पुत रिजस्तो भंनु ॥ २१ ॥ ते जे उर्जन संसर्ग भज साधु
 समागमे ॥ कल युवे म हो रा वि स्मरं नित्यं मनित्यता ॥ १०० ॥ यो सी सार अथि

॥ चान ॥

२२

हो भाने जां नु उर्जन संग हो डनु ॥ साधु जन को संग गर्न रात दिन धर्म गर्न ॥ १०० ॥
इति श्री बुद्धि चान केशा रसं ये हे वथम सत क समा प्र ॥ ॥ १ ॥
शास्त्रार्थ चक्षुषा विमान रेडानि ति चक्षुषा ॥ वेदार्थ चक्षुषा विप्रा इति चार चक्षुषा ॥
॥ १ ॥ ये रिडन को आषा भन्या को शास्त्र हो राजा को आषा भन्या को निगि हो ॥
स्वरा को आषा भन्या को वे दे हो ॥ ई चार ^{मरु} जनु को आषा भन्या को धन हो ॥ १ ॥ राजा
धो मे नि धर्म जा या ये या य समा ग मे ॥ राजा ड निर् वृति स्यात्तथा राजा तथा प्रजा ॥ २ ॥
राजा धर्मिष्ठ भया प्रजा य नि धर्मि डे ह राजा या वि भया प्रजा य नि या पि डे ह ॥ राजा ले
वे डे थो क ग ना घ डि प्रजा ले य नि ग डे नः ज को राजा त को प्रजा ॥ २ ॥ उग्र मं सह धि

॥ ७६ ॥
१८

येवलवुडिपराक्रम॥ वेदेतेयसेतिष्ठतेतस्य देवायसीकित॥ ३ ॥ उग्रमसह
सीधिर्येवलवुडिपराक्रम॥ एतेशुणभयाकामनुषेलाइदावेदेययनिदराउछं
॥ ३ ॥ सामेदानेनभेदेनक्रमेनचवलेनचसर्वेचरुसदाशत्रुपातनियोना
धिय॥ ४ ॥ सामेदानभेद^{वलीयाभुवकुलदेवराहिव}वलसाम्बन्धुलाइयनिराजालेशत्रुकोनासग
द्वि॥ आक्राराजोवडाउनाकनचाहिह॥ ४ ॥ यात्रेत्पामिशुरोरागिभोगेय
विजनेसह॥ शास्त्रबोधारणोधानृयोयेवलक्षने॥ ५ ॥ यात्रहेरिकनाया
गगन्पुण्युरादेधिकनबुसिहुन्या॥ आक्रायद्विवारवादुलोगारिषाशास्त्रजा
न्यासीग्राममासुरोहुन्यायतिराजाकास्वभावलक्षनेहुनु॥ ५ ॥ उतमंयतिषा

॥ चान॥

१८

तेन सुरोभेदेन योजय सुमं धामर्थ्यप्रदानेन सप्ततुल्यपराक्रमे ॥ ६ ॥ वडामनुषेलाई
नमस्कारगारिहातलिनः भेदगारिशुक्लकनहातलिनः ॥ यराक्रमेकनयराक्रमगारिहा
तहालिनः ॥ ६ ॥ आत्महिउयरेदयाविषाहिदुयरसेच ॥ गृहेकुसुमईयांगामि
यरभावंचलक्षनः ॥ ७ ॥ आफ्राडुरवअर्काकननकरुनुअर्काकोडुरवभयाहुता
ईदिनु ॥ अर्काकोदोषकरागुप्रगारिगवनुसुषलेयकासनगर्नु ॥ ७ ॥ मनसाचि
तिर्तेकार्येवच ॥ सांप्रकासयेमंजलक्षनः ॥ गुधात्माकार्येसिद्धिश्चजायते ॥ ८ ॥
केहिकार्येगन्धामायनिमनलेचिंतनागर्नु ॥ सुषलेयकासनगर्नुमंजरेगुप्रगर्नु
गुप्तेकार्येसिद्धिहुंछ ॥ ८ ॥ उयकारगृहितेनशत्रुनीसत्रुमुधरे ॥ वाह्लने

त

॥ ७३ ॥
१९

करथैव कंधकेनेव कंठकं ॥ ८ ॥ शत्रुलेउयकारतान्यायनिहुंहुकस्वभन्याकांठा
~~मिथ्याको~~ कोठेलेकिंहुंहुतत्कारनं शत्रुयनिमिहुंहु ॥ ९ ॥ वहदमित्रस्केपे
 नयावपारं विवर्जयेत् ॥ तथैवमागतेकालेमाघटमिवासेति ॥ १० ॥ आक्रावियति
 कालमाशत्रुलाईकाहमाचहुउनुयई ॥ आक्राकाजपुण्यायहिघासकाभारिमिल
 काहिमिलकाउनु ॥ १० ॥ हेजिहूकथुकस्मैमधुरं किंनभाषिते ॥ मधुरं वदकं ह्या
 मिलोकायं मधुरं प्रिय ॥ ११ ॥ हेजिहू मधुरवचनबोलहिचरोनहुनुक्याहोभन्या
 ॥ मधुरवचनबोलायहिसवैकोपियारोहुंहु ॥ ११ ॥ जिहूयेवसतेलक्ष्मिजिहू
 येमित्रबांधवा ॥ जिहूयेबंधनं चायिजिहूयेमरनीहुवै ॥ १२ ॥ लक्ष्मियनिजि

॥ चान ॥
१९

आकाश्यामावस्या काहन् इष्टमित्रयनिजिआकाश्यामावस्या काह ॥ मरुनयनि
वैधनयनिजिआमाह ॥ तस्कारनामिथोवोलनु ॥ १२ ॥ प्रियवाक्यपुष्पधानेनस
वर्गुषेतिनेताव ॥ तस्मात्तदेवज्ञातव्यं किं वाक्य किंदरिडता ॥ १२ ॥ मिथोक्रावोल्या
यहि सवैलोककोपियारोहुं ॥ तस्कारणावाक्यलेदरिडनहुनुमिथोवोलनु ॥
॥ १३ ॥ अग्निरोगरयश्चैव शत्रुयातिर्धनामहा ॥ क्षत्रसरायहारिचर्यदेतेआ
तताईन ॥ १४ ॥ आगोलाउन्पाविषयुंन्या अर्काकोप्रासालिन्या ॥ स्वास्मिहरन्या
विर्ताहरस्यायतिआतताईवोलाउहुं ॥ १४ ॥ आतताईनमायातमपिबेदांतः
पारग ॥ जिघाशतजिघासीयानोनेवसहामवेत ॥ १५ ॥ यलाआतताईकन

राजालेसलनिलेगयाभैगनुकसोभन्याजसो।मलनिलेफुलसोत्रैरिपूछनूवोटउषेलदेननूतसोगरिराजा
लेपनिप्रजोहेरिकनदंडगनुयोगगनुअन्यावलेसंवतिजिउनलिनु॥११॥६॥
कोविराम

॥ उद्धि ॥

२०

वास्त्राभयायनिमान्यायायलादेन॥ चरुयदोगजान्यावास्त्रालाईयनि
यस्त्राभयामान्यायनिहथ्यादेन॥ १५ ॥ राष्ट्रयाक्यतेनित्यधर्मवयरायने॥ नी
र्जांतयस्त्रेन्यानियतिधर्मनयालेयत्॥ १६ ॥ राजालेसदासत्यगरिराजपेयालः
नागनु॥ शत्रुलाइजितिकनधर्मलेयुजायाहिररुनुयोरगजाकोस्यभाचहुंछन॥
॥ १६ ॥ पुष्पपुष्पविचित्रंगिमुलक्षेदेनकारयेत्॥ मालाकाचइवांगानिय
थायानतिसारतां॥ १७ ॥ राजालेमालनिरभैरहनुकसोभन्याचाहिदेकल
तियनु॥ वोगनउषेलनुतसोराजालेयनिप्रजालाईदंडगनु॥ १७ ॥ अरिमि
उमुदासिनांसधार्थीविहंगुहं॥ योनेनु॥ तिमैदातासर्वसर्ववनस्याति॥ १८ ॥

॥ चान ॥

२०

ॐ

यो धेष्टयो मित्रयो उदासियो मधेमयो ज्येष्ठयो गुरुभानि ॥ जानि व्यवहारगुणयुक्
 शत्रु मित्रको विचारनगर्णो चादेनासिद्ध ॥ १८ ॥ अनाय सुख युक्त अनाथ
 कलहप्रिय ॥ आगुदे सर्वभक्षचिन्नरसिधुं विनश्यति ॥ १९ ॥ आफ्र आन्दानि नेह
 रिषर्चगर्णो राजानभयो कोदे समाजुगुणगर्णो ॥ रोगि दुदास वैथोकषान्या सस्वामा
 निसचोदेनासिद्ध ॥ १९ ॥ क कालो मैवा गिको देस को व्यया गम ॥ कस्याहं कालु मे
 श क्रिरिति चिंता मुहुर्मुहुः ॥ २० ॥ काल भन्ना को क्या हो धु च भन्ना को क्या हो लाभ भ
न्या को क्या हो ॥ म को हो सामर्थ क्या हो भनि वार वा स्वो न ॥ २० ॥ शिंहो दे क व का
दे क शि थ च त्वारि क क हो ॥ वाय सा न्यं च सि थ च व ह स्यु न ह्री नि ग ह ह्य ॥ २१ ॥
 ३ मित्रभन्ना को क्या हो. शत्रुभन्ना को क्या हो. दे शभन्ना को क्या हो।

कुशुकोवाहगणानिनु. कागकोवावगणानिनु

॥ ७६ ॥

२९

सिंहकागुगायकलिनु वकुलाकोगुगायकलिनु भन्नाकोह ॥ कुकरकोगुगाहगुगालि
नुगहाकोतिनगुगालिनु एतिगुगालिनु ॥ २१ ॥ पुनर्कार्ये मल्यं वाचयोनरकर्तु
मिच्छति ॥ सर्वारंभेषु कार्ये सिंहदेवं विधियते ॥ २२ ॥ केहीकार्यगन्यायनिनसि
द्धिगच्छादनु ॥ एतिगुगासिंहहउलिनु भन्नाकोह ॥ २२ ॥ इडियानिनु मयसैवक
वर्तुदिगोनर ॥ कार्ये काले प्रयत्नानि सर्वकार्ये निशयते ॥ २३ ॥ वकुलाकोहानि
मनुष्येले आक्रकार्ये नहुज्यालसाथ भई रहनु ॥ कार्ये काओसरययायिहसवे
काजकोसाधनागर्नुयो वकुलाकोगुगाहो ॥ २३ ॥ पागुस्थानचनु धंचसनिभा
गचवेधुका ॥ स्त्रियमात्रे मभुर्याचशिष्येचत्वारिकुर्कता ॥ २४ ॥ व्याहानैउथनु

॥ चान ॥

२९

शत्रुसिंहाजुगर्न॥ आक्रादाज्यभाईवरेवं रेदेवर्नस्यास्मिंकेताकेतिवाटलौगारिधानो॥
रुतिचारगुणाकृष्णोहउलिर्न॥ २४ ॥ गुहमेथुनैवैवंकालेवांखसंयुहः
॥ अयमादिसुधितंविसीधुचक्रा^{पुत्रे वापुसाति ॥ २५ ॥} २५ ॥ मेथुनगुप्पगर्नकालकालमाघ
बोकोसंगर्गर्नदज्यभाईवरेवंरेदेवर्न॥ अहंकारिनकुनएतिपाचगुणाकागहउ
लिर्न॥ २५ ॥ वहासिचाल्यसंतुष्टुमुडासिधुवेतन॥ स्वामिभगतश्चमूरश्चः
स्वेडेतेस्वानयोगुणा॥ २६ ॥ भयाहेरेवानुनभयासीतोवहुनचोडेसुतर्नचोडे
उथनु॥ स्वामिभगतिहुनसुरोहुनएतिहगुणाकुवुरहउलिर्न॥ २६ ॥ अवि
धौतवहर्तभारंसिताश्चवैर्विदित॥ सुसंतुष्टाभवेनिर्गुनीनिसिधेचगर्दया॥ २७ ॥

३३

म

हे सु

निवाक

॥ ७५ ॥

२२

नविमाईभानिवोकन्यातातोचिसोनमान्या ॥ ठे निभयायनिसीतोवमान्यायतिगिन

गुणागडाहेउलिन ॥ २७ ॥ विंशतेतागुणापोकाय कथाविचक्षणासर्वेयति

रिपुंसर्वागतोजश्रविष्याति ॥ २८ ॥ योविमगुणजसमनुषेलेलियाकोठे विच

क्षनमनुषेलेशत्रुकोनासगईन ॥ जाहातोमानिसगयावाहाजतईन ॥ २९ ॥

रुकीयो

अमुनेमनुष्यानांमनुसंतप्रवेतसां ॥ उयकारायकारेनपुंसीभवतिविग्रह ॥

मुखनभया ॥ २९ ॥

काशानि

~~यकोउखआप्रेमनसां~~ ॥ यरसरउयकार

मनुष्यह

गदिलोधुरुकदेन ॥ २९ ॥ यकोदरंयथयेचरंतमहानवे ॥ असाधिताव

रुकेसोम

नसंतिभैरुडाईवयक्षन ॥ ३० ॥ उइकंधालरुकेयतभयाकोभैरुडायासि

न्याआफुमन

निवा

समशिराषुछनआप्रे

मनमानाशगईनसा

धुजनलेजसेकुएभयायनि

तसना

कोछताहि
ताहिआवि
वक्षेरागम
यलेकाय
दिगारिफ
जरिसत्रुक
नजिहछ ॥

॥ चान ॥

२२

समुद्रमावस्याकोछन् ॥ इईकयालऊगडागारिमरिजांछतसअर्थआफुसितऊगडा
नगर्नु ॥ ३० ॥ विसनेसनिऊर्वीतियातकेनायिसंहति ॥ सक्षयानरगोपुछेयुरादा
सिरार्थजथा ॥ ३१ ॥ विधतिथयायछिसानुजातेछेउभजनागरितारुन्यछ ॥ आरा
मचंडकनगाऊाघदावानरसवैवाटलोगारिकनश्रीरामचंडलेसमुद्रमासागुवा
ध्याथ्या ॥ ३१ ॥ पुयंसतवयंयंचविरोधचयरस्यरसनिसकममानेनुवयंयंचोतर
सत ॥ ३२ ॥ जुधिस्थिरमाहाराजालेडुजांधनछेउभन्यातिमिहहसयभाई ॥ हा
मिहहयाचभाईविरोधगरितायनिःनिदानमाआफुआफेहुँछविरानाविरानेहुँछ
समतासमेहुँछ ॥ ३२ ॥ हित्वाभृत्याचकर्मानिऊयावैरिससंतक ॥ ग्यातवम

॥ बुद्धि ॥

२२

मतायाति यत्परस्परमेव च ॥ २२ ॥ आप्लादाग्रभाई कर्त्तृकरागर्तृ ॥ तय
निनीदानमाआप्लाआये कुं ह ॥ विरानाविराने कुं ह समतासमे कुं ह ॥ ३३ ॥ वि
ताजोरमनुष्यानां अस्थानां मैथुनजोर ॥ अस्मेभाग्यजोरस्त्रिनां मातयोजोर्त्त ॥ ३४ ॥
मनुष्यकोजोरचित्ताहो घोडाकोजोर मैथुनहो ॥ स्वात्मिकोजोर अस्वभास्यहो वस्त्रुः
कोजोर घामहो ॥ ३४ ॥ अंधाजरामनुष्यानां मनुष्यावादिताजरा ॥ मैथुनजोरख
नीमस्थानां मैथुनजोर ॥ ३५ ॥ ठेरिहिन्यामनुष्यचोदेवुठो कुं ह नहिन्याघोडव
ठो कुं ह ॥ सर्वभोगनपायाको स्वात्मिवुठि कुं ह मैथुनलेयनि घोडावुठो कुं ह ॥
॥ ३५ ॥ कलावृक्षियराधिनां कक्षवासानिराधया ॥ अतपुर्वार्थसंयुक्तसर्व

श्री
चान

२२

कस्यदरिद्रता ॥ ३६ ॥ अर्कोकोआधिर्जभईरहनुयन्यायाह्कस्रहुंहु ॥ आश्र
मनरुन्यामनुषेकनयनिकस्रहुंहुसवैकसादरिद्रकोहो ॥ ३६ ॥ अथितोव्या
धितोमुर्वप्रवासियरसेवक ॥ जीवितोपिमृतंयंचयंचेपडयभागिनी ॥ ३७ ॥
सदेधननुत्याउन्नाकोसुरार्गगर्णोसदेगोगिहुहु ॥ सदेयरदेसगान्यासदेअ
र्कोकोचाकरुन्याजतिमुषिभयायानिमन्याकोनुलेहुनुअभागिहुनु ॥ ३७ ॥
गोजत्रनिधमायातिभुकोचापिदिनोदने ॥ सावप्रयतायातियदिसशक्रस
मोनर ॥ ३८ ॥ अर्कोकोघरमासदाजानुसदेवानुयन्यायाह्कतत्याउना ॥ इ
दुनुलेभयायानिमानिसमन्याजकोहुनु ॥ ३८ ॥ यरानांयएवसुचपरया

॥ पुद्गि ॥
२४

नयराखिय ॥ यरसेवगृहेवाससकस्यापिथीयहरेत ॥ ३९ ॥ अर्काकोअनसा
ङगयनिअर्काकोवस्त्रलाउन्नायनिअर्काकोस्यामिगसनगर्णायनि ॥ अर्काको
घरसावस्नाइउगुल्येभयायानिलस्मिनासिंह ॥ ३९ ॥ असौचौरधनोविद्या
असौचोपुत्रवानर ॥ असौचोविधयानारियुत्रयोत्रयतिवता ॥ ४० ॥ ग्यानभया
पानिकंगालअसुचिछोरानहुन्यामनुषेअसुचि ॥ पुरुषसस्यापद्विस्वाप्तिअसुचि
हुनु ॥ ४० ॥ विभवासर्वपुज्योतनसरिरानरदेहिना ॥ चादालेपिनरथेष्टेयस्या
मिष्टविपुर्धनो ॥ ४१ ॥ सबैलोकलेधनकोमानगर्दनमनुषेहल्लाईमान
गर्दन ॥ साहाजनधनिभयातचाडालभयातयनिपुजागर्दन ॥ ४१ ॥ धन ॥ चान ॥

२४

साङ्ग्यरंधर्मधनेसर्वप्रतिथिता॥ जिवति धनिरो लोकाभृत्याभ्या रधनामसे॥ ४२ ॥
धनलेसर्वेप्रतिष्ठमयो धनले धनयनि लाभकुंछ॥ तस्कारन धनिमाक्षेसर्वे जि
उदोहो धननभया कामांछे मया जैरुनु॥ ४२ ॥ अति संघट्टमायनो भेतथा
यानातभयं॥ अतृचसि वराहधंसत्रवग्रनयालित॥ ४३ ॥ अति धनभया
याह्वस्छन्कसोभन्ना अगुरोयवतकनवजुलेषस्छन्॥ तसौधेरि धनभयाय
हिनासिंह॥ ४३ ॥ कोभक्षेभक्षेको निपंको शुधानिचरोगिना॥ यस्य भाय्या
तो संतुष्टे कोचतसेसवंगृह॥ ४४ ॥ सर्वभक्षक्यवायाको छैन सदा रोगिकनः
सुवकाहाकुंछ॥ नस्कीस्यासि असंतो विछुउत्कन सुवकाहाहाला॥ ४४ ॥

॥ उद्धि ॥
२५

सोभिषेक्यकोनित्यं सुषनित्यं मरोगिनां ॥ भार्या भर्तृवसानस्य तस्य नांत्योत्सवं ग्रहे ॥ ४५ ॥
शुभिषेभयाकासमयमासवेकार्जगन्यायनिसुभकुंड ॥ अरोगिसदासुषिकुंडस्वास्तिः
वत्पाकुन्पाघरमासैदेमंगलकुंड ॥ ४५ ॥ सर्वयरवतंडुखसर्वमासवसंसुषं ॥ इति
विआसमासेनंलक्षेने सुषउखयो ॥ ४६ ॥ भर्काकोवस्यमायर्नुसैदेउखभाप्राः
वस्यमारहनुसवेसुष ॥ योसंसारमासुखउखउईथोकलक्षण ॥ ४७ ॥ सुखन्याः
तांतंउखउखस्यातांतं सुषसुषउखमनुष्यानांचक्रयतिरिर्वितते ॥ ४७ ॥ सुखका
अंतरमासुखकुंडउखकाअंतरमासुषकुंड ॥ मनुषेकनसुखउखचक्रैफिदैरहं
॥ ४७ ॥ वकुभिमुखसंघातैयंसुर्वितिभि रन्योन्येयसुसुवितीभि ॥ हृदयंतिगुणा

॥ चान ॥

२५

सर्वमेधैरीवदिवाकरा ४८ ॥ सुर्वमेवैवाट्लाभयाकाथाउमागुणिकगणानिक
रा ॥ श्रीसुर्येलाईवादरलेछोयदोके सुर्वलेगुणिकलाईछोयछन् ॥ ४८ ॥ असतास
हसंगेनकोनयाति धमागति ॥ ययोपिशुदिनिहसोमअनितांविधियते ॥ ४९ ॥ कु
जातिसंगभयायहिभलामानिस्यनिकजातिवोलाउछन् ॥ सुदिनिलेउदवोकेल्याया
यनिमदेहोलाभंछन् ॥ ४९ ॥ अससंयकदोयेनअधमायाति साधवा ॥ मण्डिः
गिमिरसकसमोयविसमायते ॥ ५० ॥ असाधुसितसंगभयायहि साधुयनिअ
साधुछ्छ ॥ कसोभन्याअधारोलेछोव्यायहिः समयातोयनिविस्मदेविछ्छ ॥ ५० ॥
उतैमेसहसंगेनकोनयाति धमागति ॥ सुदीनननीधार्येनेयथितेकुसुमेसह ॥ ५१ ॥

॥ वृद्धि ॥

२६

भलामानिससंगभयायद्विमदोयनिभलोकुंड ॥ फलसितघासमितिहृत्तयनिकया
लमारहं हतकोजानु ॥ ५१ ॥ किंकरीव्यंतिसंयकस्यभावोडरगिकमे ॥ यस्यात्र फल
मध्यकषायो नारागनं ॥ ५२ ॥ भलाकोसंगभूयायनिस्यभावकुंदेन ॥ अमिलोका
भिद्रकाकोयोलायायायनिअमिलकुंदेनतन्त्रेस्यवहुदेन ॥ ५२ ॥ सर्करारसवेधे
नमध्यानियोषतिवृत्त ॥ मधुक्षिरसमागृहिविधकिंमधुरायते ॥ ५३ ॥ सर्षरअमि
रोयर्नुडदरमहसदाहुतर्नुतेयनितो ॥ कुंड ॥ तसअर्थस्यभावहुदेनभनिभन्याको
हु ॥ ५३ ॥ युक्तकेषुचयाविआयरहसोवुचयधनं ॥ कार्यकालेचसंप्राप्तेनसाविआ
नतधनं ॥ ५४ ॥ युक्तकमालेव्याकोविआरअर्कोकोहागकोधन ॥ कार्ययथाघलि

॥ चान ॥

२६

मालागद्देन तपो विआयनि धनयनि आपुहोईन ॥ ५४ ॥ उरस्थानि च मित्रानि निस्ने
हो न च वाधवा ॥ प्रयोजन किं कार्य नहि ते निस्फला निच ॥ ५५ ॥ गाढा को मित्र स्ने
हत भया को भाई क्या प्रयोजन छ ॥ वदो धना अभयाय नि नी स्फल हो के हि प्रयोजन छैन
॥ ५५ ॥ अतथा रुमनु ध्यानां उरस्थानि च वाधवा ॥ कांता चाले ध्या भर्ता ध्या घाने नोय
ति छेति ॥ ५६ ॥ वन मा को फल ताठा को भाई ईका जमा याउं देन ॥ भिता माले ध्या को
मुद रि स्वास्ति ज को छन भनि जानु ॥ ५६ ॥ प्रजावचन नहि न से कर्म दिन गुयो नर ॥
निरथो चे गता गत्य भ्रान्ता हुन योजथा ॥ ५७ ॥ अज्ञानिका वचन न जान्या को का
र्ज्य र्थ हो ॥ कस्व भन्या घरा नि मा च्यु उष त्या फे रु छ ॥ ५७ ॥ छाग गुद्र अरि थि थि

॥ बुद्धि ॥
२७

दंयपोकलहंतथा ॥ चत्वारो निस्फलायातिप्रभाते मेघदुस्वर ॥ ५८ ॥ वोका कोजु
दुष्पविकोथा यजोइयोईको रदाई ॥ आहानको मेघरतिथोकवैर्थकुंछ ॥ ५८ ॥
निस्फलाकयनेसेवानिस्फलारतिचानुले ॥ दोषसंजुक्तमिलस्यभुचिविविषये निः
स्फली ॥ ५९ ॥ मनुष्येलेयेतिथोकछोडनुक्याक्याभन्या ॥ कयनिकोसेवारोगिको
मैथुनदोषिषासराकोविआरुगिथोकछोडनुयई ॥ ५९ ॥ बलयानुसजाया
जोविहया मायिकैन्यका ॥ हयसिनिनानिनसेवेप्रालेशदृशिजुले ॥ ६० ॥ ज्ञानि
मनुष्येलेअहयिभयायनिवडाजुलकि कंन्याविवहारगर्नु ॥ वदोमुदरिभयाय
निनिचजुलकि कंन्याविवाहानगर्नु ॥ ६० ॥ विषादयेमिनंशोहमध्यादयि

॥ चान ॥
२७

कांचने॥ निचादेपुतात्मा विआतिरत्नडल्कलादीये॥ ६१ ॥ विषमाभयायनिअ
 मृगफिकिलिनुजोग्यकरामातावाल्कोवचनयनिमानु॥ निचाकोभयायनिहुलो
 विआतालिनुमानुकलकिभयायनितिरत्नलिनु॥ ६१ ॥ कसेदोषकुलेनादि
 व्याधिताकोगायिदिने॥ केनसमासनपाप्रथीकस्यानराता॥ ६२ ॥ कस्काकु
 लमादोषहेनरोगानलाग्याकोकस्कोह॥ दुषनयाउत्पाकोहलक्ष्मिथिरभयाको
 कस्कोह॥ ६३ ॥ दोषोयेदिगुणोयेद्विनिगुणोयेद्वजंगुषु॥ मुकुमारस्ययमसे
 मालोभवानेकवर्म॥ ६३ ॥ सर्वेकोदोषयनिहुहवेसकमलफुलमानारोषप्रो
 हुह॥ तलेगुणामायनिदोषहुह॥ ६३ ॥ असुगंसिसिलेवाहुअमलक्षिरः

॥ उद्दि ॥

२०

भोजनं अमृतं गुणमनिभार्या अमृतं वातभाषिता ॥ ६४ ॥ शिशिलकालः
मा अमृतमया को आगोक्षिरभोजनगर्भयति अमृतं हो ॥ गुनले गुक्रमया कित्वा
स्मि अमृतं हो ॥ ६४ ॥ दुलभाया कतिवाति दुष्टं भस्नुक्षमप्रभु ॥ दुष्टं भावं च
पुह नारि दुष्टं भवं च नयय ॥ ६५ ॥ जोग्यकराक्षे मावंतरा जाहित किट्यामि
आतिप्रियमवचन दुष्टं भमभया को यति यति थो कहो भनि जानु ॥ ६५ ॥ न
दिना जाहु विष्टे स्य नारि नाच प्रतिवता ॥ मनुष्यां नानुयं व्याहु सेदना यत्र नृवृत्ति
॥ ६६ ॥ नदि कोष्ठे स्य भया को गंगाः स्यामि माष्टे स्य प्रतिवता ॥ मनुष्ये कोष्ठे स्य
राजा देस मा आ पुव स्या कोष्ठे स्य ॥ ६६ ॥ पुत्रयो वनना किं नं दासि दासः

॥ चान ॥

२०

समाकुलं॥ भाग्याविरहितपुत्रीयथारन्यतथायह॥ ६७ ॥ मनुष्येकोहोरनातिक
माराकमारिभयायति॥ स्यान्निनभयाकोघरवनजसोकुंछतसोघरमायनिहो
ला॥ ६७ ॥ सर्वेषामेवरत्ननानीस्त्रीयोरत्नमनुतमा॥ तस्मात्तदर्थनिर्गानित
यात्प्राधान्येनकिं॥ ६८ ॥ सर्वैरत्नमाथुरोरत्नमन्याकोक्याहोभन्यास्त्रीरत्न
हो॥ तस्यअर्थस्यास्तिनभयायहिधनकोक्याप्रयोजनह॥ ६८ ॥ कुस्त्रीह
तिकुतुंबानिकुपुत्रकुलहन्यते॥ कुमंत्रिहन्यतेराजाराष्ट्रचौरनहन्यति॥ ६९ ॥
जसकिघरमाकुचरित्रीभयाकुटंवकोनासकुंछ॥ कुपुत्रलेकुलकोनासग
हनुकुमंत्रिलेराजाकोनासगहनुचोरलाग्याकोदेसनासिंह॥ ६९ ॥ खिना

॥ ७६ ॥

२९

दोषसहस्रानि शुणा विनिमहियते ॥ ग्रहवारितो संप्राप्ते न रोगो यतिना सह ॥ २० ॥
स्यान्नि को हजार दोष ह्यु रा भया को ति निथो क ह ॥ क्या क्या न न्या को घर को र क्षा
गर्नु छो रा घा डनु पु रू य स्या य हि सति जानु ॥ २० ॥ क व य न किं न य स्यति कि न
भ क्ष ति वा य सा पु मा दा कि न ॥ कु र्व ति किं न ज पि ति स प्र या न ॥ २१ ॥ क वि र ह
रू ले न दे र्वा को क्या ह का ग ले न दे र्वा को क्या ह ॥ स्या स्मि रू ले क्या ग दे न स त
वा ला ले गा लि न दि या को क्या ह ॥ २१ ॥ पु त्र पु या ज न भा र्ज्या पु त्र पि र्णा पु यो
ज न ॥ हि न पु यो ज न मि त्रं स र्व ना म पु यो ज न ॥ २२ ॥ छो रा का नि मि ति क न स्या
स्मि चा हि ह ॥ आ पु र्पि र्ण का नि मि त्र ले छो रा चा हि ह गा होः ~~गा होः~~ ॥ चान् ॥

२९

सार्गानिमित्रलेमित्रलाउनुआफ्रानिमित्तमासवेचाहिछ॥ १२ ॥ समुडा
वरणाभुमिप्राकारवर्णागृहानरेडावरणादेशा॥ चरित्रावरणास्त्रीय४॥
॥ १३ ॥ समुडकोरुष्टिपुष्टिघरकोविष्टितयर्षीर॥ राजाकोरुष्टिजस्त्रिः
याचरित्रलेकुनु॥ १३ ॥ नगृहिनीनवासानिनप्राकारचरक्षक॥ नर्वंधु
नेवर्वंधुर्वापसिलमसिकुलस्त्रिय॥ १४ ॥ जसमनुषेकनघरघकोधनको
प्रकारलेरक्षाकुंदैन॥ उष्टमित्रलेयनिरक्षाकुंदैनसिलवतास्त्रिलेमात्रैरक्षाकुछ४॥ १४ ॥
नदिघातयतेकुलंनानिघातयतेकुलं॥ नदिनाचनदिनाचस्वच्छललितागति
॥ १५ ॥ नदिलेआफ्रानिरमतकाउछन्वास्मिलेआफ्रानाकुलमतकाउछन

॥ ७५ ॥ ॥ नदिरनालिकोस्य हं उगतिरुं छ ॥ ७५ ॥ लतायाश्चेत्स्थितं वृक्षभृतपयाश्चेत्स्थितं
२० नय ॥ याश्चेत्पुरुषयोयि धृष्टयति न संसय ॥ ७६ ॥ रह रले आक्रान्तजिको वः
क्षसमाउद्ध राजाले आक्रान्तजिकोस्य वकनिकोमा हनु ॥ स्वाग्निनजिकोकोपुरु
षनिकोमान्दनु ॥ ७६ ॥ नैव यक्ष्यति जाता धर्माधो नैव यक्ष्यति ॥ न यक्ष्यति
मदोमगोभतिगोदोवो न यक्ष्यति ॥ ७७ ॥ जन्मकोकानुयनिके हि देवदेनका
मनुष्ययनिके हि देवदेन ॥ अहं कालिलेयनिके हि देवदेन धनमुत्पादुन्याउंन्यां
लेयनिके हि देवदेन ॥ ७७ ॥ जेर्णमिर्वयुसस्येति भार्याचगतिजोभनो ॥ र
णप्रत्यागतसुरंसस्यचगहनागत ॥ ७८ ॥ मनुष्यकोअन्नवायाकोयव्याको

॥ वान ॥

२०

निको स्वास्मिको छोराया उन्हाको निको ॥ संयाम देवि सुरे नै घर आयाको निको अं
न घर आयाको निको ॥ ७८ ॥ लास्मिलक्षन हित चक्रल हिन सरस्वति ॥ अथा
त्र लभेते नारि गिरो वये निवास व ॥ ७९ ॥ लक्षन नऊन्या छ उलास्मि हिन कुल
मावस्या कि सित सरस्वति ॥ हिन घातिय जात मागे भया कि स्वास्मि इडले पर्वत मा
य नियन्या जलो वेध ऊ छ ॥ ८० ॥ जस्य भार्या विरुधा च कस्य लिकल ह प्रिय ॥
उत्तर तरहं वादि च साजरान जरा जरा ॥ ८० ॥ जसमनुषे का स्वास्मि विरुधा छ च
रासदा कल हगर्वा ॥ पुरुष सित उत्तर उत्तर सित वादगर्वा सो स्वास्मिको लोगन्या
चो देवु ठो ऊ छ ॥ ८० ॥ जस्य भार्या सुलुया च भरतार मनुगामिनि ॥ निप मधु

॥ ७६ ॥
३९

रभा विवसा श्रीयान श्रीयान श्रीया ॥ ८१ ॥ जस किस्वा मिसुंदरि ह् पुरुष ले भन्या
को मां ह् ॥ पिनि वचने ले वोला उ ह् ते को यो ई वु ठो भया यनि दिन दिने नै जुगान ऊं ह् ॥
॥ ८१ ॥ यस्य भाग्या गृहिनि तं सुनिय यारि गति ॥ तसे नि दंति गात्रा नी य ची नी वहि
मा गते ॥ ८२ ॥ जस्की स्वा मिसु ले लो गन्या ला ई दिन दिने हव कां ह् ॥ पो पुरुष हि
दो का कमल सुक दफै सुक हनं ॥ ८२ ॥ यस्य गृहे पु भाग्या च मा त्रै वहि त कालि नि
॥ वठ मे तस्य गात्रा नी सुक्र यक्ष जथा सा ति ॥ ८३ ॥ जस्की स्वा मिसु पुरुष कन आ
मा ले निको ग दफै पुरुष कन निको ग ह् न ॥ ते को सरिर सुक्र यक्ष का च उमा वठ
डा फै दिन दिने पो पुरुष को सरिर वठ ह् न ॥ ८३ ॥ किं गा विव रु वि पुत्रा सो क

॥ यान ॥
३९

सीतायकारें॥करसेककुलालविषनविश्रामतेल॥ ८४ ॥जोमनुबेलेआफ्राना
 लाईसोकसीतायडुषदिन्याठैरिपुत्रभयालेक्याकुंछ॥कुलकोषेष्टसुपुत्रएकेभ
 यायनिहुंछ॥ ८४ ॥स्थुलजग्वजराभोलक्षमनसहगामिनि॥घनकुसियदा
 सितातेदातेडुखभागिनि॥ ८५ ॥रामचंद्रकाजघाथुलोनालेलक्षमनकोउदा
 धिरिसहआउनाले॥सिताकोघनकेसकुनितिनजनालेअनेगवनमाडुषपा
 ईगया॥ ८५ ॥एकभाज्यात्रयोपुत्रादहलेदसधेनच॥कन्याकालावसानेच
 नतेजसेगिविक्रिया॥ ८६ ॥स्वाम्मियेकछोराडुईगाईसदसतिघरमाकु
 न्यामानिस्कनविगारयेईरहुनु॥ ८६ ॥यक्यावहयोपुत्रायेदेकोपि

॥ ७५ ॥
३२

गया वज्रो ॥ यतो ता व्या सो मे धेन विठवा वृष मुतेजे ॥ ८७ ॥ मनुष्ये को धैरै होरा
भया ता ये क होरा ता गया जान्या कन ॥ अस्व मे ध जग्य को र निरो व सा हा दान ग न्या
को पु रा प या ई छ त सौ जानु ॥ ८७ ॥ ये के न शु स्क वृ क्ष न द हे मा न त वी हि नी ॥ द हे
ते ज द न स र्व क पु त्र न क लै य था ॥ ८८ ॥ य क सु क्पा का वृ क्ष मा आ गो ला ग दा स वै व नः
द ग्ध ऊं ह ॥ त सौ क पु त्र ले क ल को ना स ग र्ह नै क पु त्र ले छा दि दि नु ॥ ८८ ॥ य स्य पु त्रा
व स्या भ त्पा भा र्ज्यो च दान गा मि नि ॥ नि व व रु पि सं गु ष्ठ स्व र्ग त सै म हि त ले ॥ ८९ ॥ ज
स म नु षे को हो रा क मा रा क मा रि त्वा स्मि आ पू ना व स्य मा ह न् ॥ ध न प नि ह् ए स्को त्थः
ग यो हि ह् ॥ ८९ ॥ ये के ना पि शु वि क्ष न पु व्य पि ते न सु गं धि नां ॥ वा सि ता ता न्य नै स र्व सु

॥ चान ॥
३२

पुत्रेन कुलजया ॥ २० ॥ कसैकायकवृक्षमासुगंधकूलह सवैवनमावासआउह
तसैसुपुत्रलेकुलकोउद्धारगहन् ॥ २० ॥ यपुत्रस्यपितृवस्यासपिनायपुपायक ॥ तम
त्रियस्यविश्वासं सोभाज्यायत्रनुविधि ॥ २१ ॥ वावुकावस्यमारहत्याजोहहोराभत्या
कोवहिहो ॥ पालत्यापोस्याकनवावुभनुजसक्षेउविश्वासगन्याहत्यामित्रहोजोआ
क्रावस्यमाहत्यास्मिहो ॥ २१ ॥ पश्यजिवंतिजीवंतिविष्टामित्रासोधवा सकूलैजि
वितेतसेआत्माथकोनजिवति ॥ २२ ॥ जत्काजिउदावात्सणामित्रवांधवजिउह ॥
पुरजिउनुतस्कोहोआक्रामात्रजिउदेनतसअर्थजिउनुकथिनहो ॥ २२ ॥ सजिवं
तिगुणायस्यययधर्मसजिवति ॥ गुणधर्मविहिनसेनिष्कलंतसेजिवति ॥ २३ ॥

॥ बुद्धि ॥

२३

जसमनुषेकनगुणारधर्मकृन्नापोजिउदोहोभनु॥ गुणपतिधर्मपनिनकृन्नामनुष्य
मन्याकोहोभनु॥ २३ ॥ वाचासरस्वतिजस्यभाज्योरुयैविनेसेति॥ लक्ष्मिपागवतिज
सेसकलंतस्यजिवित॥ २४ ॥ जत्कामुषमासरस्वतिह॥ घरमासुंदरिन्निहृदान
गर्नुत्तामर्थकोलाक्षिहृन्॥ तवजियाकोसाफलेहुंहुन्॥ २४ ॥ धर्मार्थकामसुखा
नायसेकोपिनविश्रोअजागरन्तन॥ श्रैवनीरथगियस्यजिवन॥ २५ ॥ जसमनुषे
लेधर्मअर्थकाममोक्षयतिचारथोकमा॥ यकैनगुल्याउनुजियाकोनिस्फल्लव्यर्थ
जन्मपोहो॥ २५ ॥ धर्मकर्मविहिनसेदिनयांगिचविंक्रिया॥ मलोहकालवसेनुनस्व
यचैवप्रजियति॥ २६ ॥ धर्मकर्मनभयाकामनुष्येकोआयुव्यर्थगरिजांहुन्॥ कसो

॥ चान ॥

३२

भन्या कलाम्काभाडाधिईशैव्यर्थजांछन् ॥ २६ ॥ सरोरपिगुणावाचोदोषाव्या
गुरोरापि ॥ युक्तियुक्वचोयाहेनवाच्यागुरुगौरवा ॥ २७ ॥ शत्रुलाईपनिगुणाकोकु
रागर्नुमित्रलाईपनिदोषकरागर्नु ॥ जोग्यकुरासातागुरुकोसर्मनमानुकदाचित्तगुरु
कोनिडागर्नुहेन ॥ २७ ॥ अकट्यनकतर्त्यप्राणोकठगतैरपि ॥ कतर्त्यमेवकतर्त्य
प्राणोकठगतैरपि ॥ २८ ॥ नगन्याकामसापानहुत्पायनिगर्नुहेन ॥ गन्याकामसा
प्राणहुत्पायनिगर्नुघटतसअर्थअर्कतव्यतगर्नु ॥ २८ ॥ उर्जनैसहसंगेनसुर्ज
नोपिवितस्यति ॥ पुसनेजलमिप्पाहुतेहेनैकलुधियते ॥ २९ ॥ उर्जनकासंगेलेसा
धुकोनासहुं कत्वभन्या ॥ निर्मलभयाकापानिमाहिलाभिस्याजस्तोसाधुकोनास

॥ बुद्धि ॥
२४

हुँह ॥ २२ ॥ कविजयति उभिक्षगोभिरभ्यागतो जिन ॥ जिता धनवति नारिवसुः
त्यासा जिता सभा ॥ १०० ॥ योति कमाया उभिक्षकुंदै न गाई पास्ती राव्या पाकु नाः
लाई गारा हुँह ॥ धनभया कोले त्यास्ति पाई ह्व सुले साभा जीति हुँह ॥ १०० ॥
इति श्री बुद्धि चानके सार संग्रह उपाय सतक समाप्तम् ॥ २ ॥ ॥ ॥
काले धारि पुना शाधिकाले मित्रे च विग्रहे ॥ कार्यकारने माध्व काल क्षियो गोपं दि
ता ॥ १ ॥ वेला हेरि शत्रु मिता मिलु नु पई वेला हेरि मित्र सिनय नि विरोध गर्नु प
ई ॥ काल सावंधन पनि हुँह काल पाणिउत हह स मय काटु हुँह ॥ १ ॥ काले पंच
गी भुतानि कारे सहरौ प्रजा ॥ काले सुप्ते पुजा गति कारे हिंडुरति कस ॥ २ ॥ काल ॥ चान ॥

२४

लेषाणाहरनगर्दकाललेपुर्जोहरनगर्द मुत्पायछिकालजागिरहंछकालमासवे
उठछन् २ कालात्परोहत्पविजफलकालात्पवर्द्धो कालात्पवर्द्धोभ्यधि
पुलाकारोहिसहरे २ कालमाविजरोयछकालमापुलिछकालमाभेष्टागछ
नृ संहारपनिकालमाहुसवेथोककालमाहुछ २ यदिसोभुमिरायभ्यर्च
डाकानरमाहता सर्वसंहत्यकालमास्मात्कालोमहोत्तरे ४ आकासदिशा
पृष्ठचउसुर्गअग्निचायु ईसवैकाललेहंछनगसअर्थकालनयाकोठुलोहुनु ४
किंकरिष्यातेभक्ताचप्रातायवनविश्रान्ते नम्रक्षयनकयामेजकिंकरिष्याति ४
५ भन्याकोनसुन्याठाउमाशरागर्वाक्याप्रयोजनह नागाकोदेसमाधोवि

७६
३५

विगायाकाप्रयोजन ५ कदरिवनमधेसंवहियर्दपराक्रमे आववेकजन
स्थानेगुणावाराकिंकरिव्याति ६ केराकोवनमाजसोआगाकोसक्रिहराउहं
तसोअविवेकिमानिसहउगुणिकमनुषकेहिलागदेन ६ पुलयभीमया
दीभवतीकिलसांला संगलासेदिमिहंतिपुलायापेनसाधव ७ पलयकाल
मासमुडलेमज्यादाहोपहनसाधुहहगाकेलेयनिहोर्दनातसअर्थसाधुपुरो
हन ७ मेरुस्वरतिकल्यातीमज्यादेसागरमेर पुतियत्तमहासावानच
गतिकदाचन ८ कल्यानमासुमेरुयनिचंचलाहंनसमुद्रयनिआपुः
सिमानमावमेदेन माहापुरुषमात्रेकेहेचलेदेन ८ विप्रतोषुसुच

चांग
३५

पराविशो वात्मगोतय पारुषे विप्रो नीचे दया साधुन विप्रो ९ स्यात्ति
 हे उर्चंचल रुद्र वात्मगोतय स्यात् रुद्र नीचा हे उर्चिचरो रुद्र साधु हे उर्चिचरो
 या रुद्र ९ साधु समाने मात्रे न भवंगुदे हि विक्रम उपकार सने नापि उर्जनके
 उर्जनके न गृह्यते १० साधु जनो हे उहात जो रमात्रे आक्र शरिर मा को ग्यान
 पाउरु उर्जन लाई सम उद्यकार गन्यापनि आक्रु देन १० उधवो धानी सा
 स्तानि नीवुद्र शास्त्रावाधये प्रत्यक्ष कल्प दिये च सुहि नोन यश्याति ११
 सागिक न शास्त्रावुज्जु उनु रुद्र मुर्वक न रुद्र देन कत्व भन्या प्रतसे दियो वाल्यायः
 निअवो देव देना सौयापि रुद्र धर्म रुद्र देन ११ कारिके रसमाकारा हल्यते को

७५

२६

येसर्जना ओतुवेदराकलावहिरैवमनोहरा १२ सर्जनहरुनरिवरजसो
वाहिरसाओभिचकोमल उर्जनहरुवजुजसोवाहिरराओभीचसाओह १२
चैउनासितालीचउचैउनेनचैउना चउचैउनेनयोमधेशाधुस्ययर्कशिगरी ॥

१२ श्रीस्वरणुपनिसितालहचैउमायनिसीतलहन् उसवेचाहिवडोमीत
लोभयाकोसाधुसंगवमुसीतलह १२ अधर्माधर्मासिद्धिनिमधेमाउमासा
नमिद्धिनिमानहिमहताधर्न १४ अधर्ममाक्षलेधनकोइस्यागहन्
मधेममाक्षलेपिनिकोइस्यागहन् उताममाक्षलेमानकोइस्यागहन्थु
लोभयाकोमानहुन् १४ मद्धिकावनमिद्धिनिधनमिद्धिनिमध्यमा नी

पिनिमिद्धिनि ४

धान

२६

चाकलहमिहतिसातमिति साधव १५ रिंगालेघाउकोइक्ष्यागईनरा
गातेधनकोइक्ष्यागईन निचालेकलकोइक्ष्यागईनसाधुलेसतानकोइ
क्ष्यागईन १५ शारास्थार्थमिहतिरूपमिहतिदाहका शानयकुलमि
हतिस्वर्गमिहतितायमा १६ अरुमनुषेहहधनकोइक्ष्यागईनस्वात्म
लेहयकोइक्ष्यागईन सानिलेकुलकोइक्ष्यागईनतायसिलेस्वर्गकोइक्ष्याग
ईन १६ अतिकोधेसयदर्वमानिलेभेनयासुषं यरयीडाचयाव
तिनेवसाधुषुविश्रमे १७ अतिउत्तगलिधनतुत्याउनुअतिरामगसि
षगर्न अर्कोलाईयिडादिनुहतिसाधुक्षउछन १७ असकोनालभ

३६
३७

त्याज्यहेकार्यनेवरय स्वलेकार्यनकुर्जाचनीस्फलेनैवसेवले १८ ज्ञानिहृदः
लेआपुनसक्याकोकामगर्देननिस्फलकामपनिगर्देन सानुकामपनिगर्देनसी
थोकज्ञानिलेगर्देन १८ शैलेशैलेनमानिकमौक्रीकनगजेगजे साधवोनाहि
सर्वत्रचंडनेनवनेवने १८ सर्वैयवतमापनिकेकुंदैनसर्वैहातिछेउगजमुनि
कुंदैन साधुहृदपनिसर्वैठाउमाकुंदैनसर्वैवनमाचंडकुंदैन १८ परकार्यष
पिकात्मासोकार्यक्षीप्रसाधने स्वहकार्यषुनिवृत्तिरजकार्यषुविक्रम २०
अर्कीकोकाजमायुक्रगर्नुआपुकाजमाचोडासाधनु मित्रकोकाममातनमनगर्नु
जाकोकाजमाविक्रमकुनु २० नललेखेवनिचानायतकृतगतनहस्यते अच

चान
३७

लामपिसाधुनांशिलालेरवचनिसंती २१ निचालेगयाकोकाममागोमालेष्वाको
जस्तोअधिरहो साधुलेगयाकोकामधुंगामालेष्वाकोजस्तोअचल २१ महता
मापदसंगीमहतामेवसपद इतरेषुमनुषेषुनापदोनैवसंपद २२ वडालाईआ
पदापनिपडन् ऐसुर्जयनिहुहुअरुकिचित्तमनुषेलाईआपदापनिहुंदैनऐसुर्ज
पनिहुंदैन २२ समुत्पद्यतीवर्केनवस्त्रसेवेनचंद्रमा विष्णुस्मरनामात्रैणम
हताकरसेयुतो २३ अर्घपात्रलेमादेवसेतोषहुहुवस्त्रलेचंद्रमासेतोषहुहु॥
विष्णुस्मरनारेसेतोषहुहुवदामनुषेहातागोन्यासेतोषहुहु २३ लेखकपाथ
कश्चेवयचान्यसपुचितका मध्येव्यसनिराहुहाकीयावीतसोपैलिता २४ ले

७६

३८

बन्धायाथगर्भासासुष्याउन्मायसमुषकुन जोग्यस्वरकोभावनागर्णाक्रियावीतस्य
पंडितकुन २४ बौहितेसप्रवानिर्जराजसेवातपोधनं धिरोसन्वारिजुवंतिका
तराक्षविवाहका २५ वेपारघोडाकोऽवानिर्जराजाकोसेवा तयस्याज्ञानिमनु
वेल्लेएतिचारथोकगर्हने २५ वञ्चेकुनार्थवानिर्ज्यविआर्थिचवकुसुतं प्रसु
कालसपेत्पार्थसाभाश्रीनृपतिव्रजे २६ धनतुल्याउन्मालेवेपारगर्नुविआपः
न्यालेठैरेसासुकुन ह्यराकाइछागर्नालेअतुकालमासभोगगर्नुमानकोइसा
गर्नालेराजाकोइसागर्नु २६ सुषीपसदलाकारवाचाचैडनसितली रुद
यकतीसीयुक्तेत्रीवीधंधुतलक्षनं २७ कमलकाफूलजस्तोमुषश्रीरवराड

चाने
३८

जसोवचनरुदयभन्याकतिजसोश्रुतकालसनहुंछ २७ उर्जनप्रियः
वादिचनेवविस्वासकारने मधुश्चवातिजिह्वयेरुदिहाराकुरविव २८
मनुष्येलेसमुसितविस्वासगर्नुहैन कसोभन्याजिधामाअमृतपेतमाविवहुं
हृतस्कारनउर्जनसितविस्वासनगर्नु २९ घरमर्पयमात्राणिपरहुंडा
नपश्यति आत्मनोवित्वपत्रानिपसेतोयिनपश्यति २९ उर्जनहृदअर्का
कोदोषरायोपमानभयापनिदेवहुन् आपुदोषवेत्तपमानभयापनिदेवदे
न २९ दर्शनिपावमुरवाधववातश्चनीगुणा उरस्थेचनपश्यतिकीधुका
इवपुष्पाका ३० धनभयापदिमूर्खरनिगुणाकोसोभावकसोभन्या पत्ता

७५
२६

सकाफलकलन्याजसोभावकुदेन २० मुखोपिपरहितव्यप्रतक्षोदिप
दपशु विप्रोवाक्यामत्यराभदृष्टकंणकोपेयथा २१ शानिमनुषेलेमु
र्षहोदनुमुखकसोभन्याडईषुताकोपसुहो वचनभन्यावानजसोगोदामावि
ज्याकोकाठाजसोफिकननकुन्या २५ सर्पकरवरकरसर्पातकु रग्वलख
तपे संवप्रधौवससर्पस्यकेनोयशानेते २२ सर्पपनिक्कुडखलपनिक्कध
कुनु स्वलभयाकोमुखकुनुकसोभन्यासपतासंवलेवस्यकुडसुखताकेहिले
पानिबुद्धेन २२ हस्तिहस्तसहस्रेनहसोनवाजिन धृगीनोदर्शहसोन
देसावाशनडजन २२ हातिदेधिहजारहाठताठारहनुघोडादेधिसयहा

चान
२८

तटाकारहनु सिंगलोदेविदसहातटाकारहनु उर्जनेदेविदेसत्पागगर्नु ३२
हस्तिनोकुसहसोनकदरिहसोनवाजिन ॐ गिलगुदहसोनस्वर्गहसोनउ
जने ३४ हागिलाईअंकुसदेवाउनु घोडालाईकोडादेवाउनु सिंगलाला
इलोरदेवाउनु उर्जजनलाईस्वर्ददेवाउनुयई ३४ उर्जनपरिहत्तव्यस्या
प्रिनीलकतोयेदि मनिनालकतसर्पकिमसोनभयकरं ३५ साधुय
ह्याकोभयापनिउर्जनकोपासनजानु मसिलेभुषणभयाकोमपहेरिक
नदरलाग्देनइछनकोउजनयानि ३५ पात्रापत्रविसेयेनधनुयत्रगयो
यथा तृणानिस्वतोथिरक्षरागिभवतोदिवर्ष ३६ पात्रकुपात्रकोविः

५६
४०

चारगर्नगाईकोरसर्पफैहोघासदियागाईलेउधदिन्हून् उददिकनसर्पलेवि
षदिन्हू ३६ द्युउशत्रुचमंतेत्रीनोयक्षेकदावन कालेउर्जमायागितुरा
म्मेवहि विजव ३७ शत्रुसानुहभनिअनादरनगर्न श्रीसरायारेनामगर्ह
न जलोघासकामलमाथोरैआगोलोपोल्हूतस्तेशत्रुलेनामगर्हने ३७
षषिकेकरकेदोषाअसितिमधुपिंगले शतकोनेचकोदेचकुप्रेस्यात्तभविषे
ति ३८ दमआवाक्षउसाथि ६० दोषहुकेलोआवाको ८० दोषहुकानावा
लदाछेउसयदोषहु कुवजाक्षेउदोषकोसंघ्यायनिनाहि ३८ स्थानकु
लेउराचौरमैविसेहपरिगेजे विस्वाससमयकार्जविनासमुपहति ३९

धान
४०

गाडकाघाडेकपातेकोतंयुहनगर्नुविस्वामनगर्नु तस्कारनयतिथोकछेनु
मित्रस्नेहपनिगर्नु ३८ मृडनेवमृडहतिमृडनाहतिदाहणा नासाधेम
डुनाकिचिगस्मातिस्पोरामडु ४० जोकमलहसोसाधुकोनासगछनक
मलालेनसक्याकोकामकेहिछेन सिगलपुरुषलेमानेकोरतिक्षणाकोना
सगछन ४० वनेयजोलागोवहिदहसुलतिरक्षति समुलमन्मुलप
तिआपोघोमृडशिगल ४१ वनमाआगोलायापहिद्वयकोजरोता
रहंछ पानिलेगाजरेसुझाउयेलेजान्हतसअर्थसिगलदेविदराउनु ४१
घररोमावलिबडुकेकन्पाचवकुनागिनि डुघराणिचक्षत्रानिडुरतयारि

पु. ५
४७

वज्रय ४२ धुरालोभमस्याकोगोरुक्कन्याउतित्यास्मि पिरोलाग्याकोवेताये
तिथोकटाठादेविछाडनुभन्पाकोछ ४२ रहस्यभेदयेभ्युयपरदोषानुकिं
तर कलहप्रकृतिचैवडुरापरिवर्जय ४३ गुप्तभयाकोकुराप्रकासग
त्योअर्काकोचुकरिगर्गोरिसाहायसाकनताठेधयाडनु ४३ अत्यायनग
जामेवगावचैवप्रसुतिका तथाचातपुरिदासिडुरितपलिवर्जय ४४ द्यो
डाकोरथवहुलायाकोहातिव्यत्यास्यास्मिपियाकोगाई एतिलाईताधादेवि
छादनुनछादिसुभहुदैन ४४ डुरजनचसदामिर्वपरस्यामिरताधिय गो
जिर्णवसुजिर्णचडुरतापरिवर्जयत ४५ मनुवेलैयतिथोकताधादेवि

चान
४९

ह्यदनुक्याक्याभन्याडुर्जनमित्रनगर्नु यरस्यामिसितवेनन्यास्यामिबुद्धिगार्
फाल्पालुगारुतिथोकह्यदनु ४५ नविस्थासदमित्रं स्यमित्रस्यायिनविस्वस्य
कदाचित्कपितोमित्रं सर्वगुहेप्रसये ४६ केहिकार्जभयापनिशत्रुसित
विस्थासनगर्नु मित्रसितयनिविस्थासनगर्नु कदाचित्मित्ररिप्तायासर्वेगुप्पुः
कासगर्ला ४६ नविस्थासेनैवविस्थासेविस्थासाभयउत्पाभिभलानैवभिक
तवि ४७ भविस्थासिमाह्यउविस्थासनगर्नुविस्थासिसीह्यउपायनिवि
स्थासनगर्नु कसोभन्याविस्थासमन्यापदिभयउत्पाभिह्य ४७ नदिनाचन
विनाचनाचभृगिस्वपानिना विस्थासेनैवकार्यव्यसिपुराजकुलेषुच ४८

५६
४२

नदिसिताम्यामिसितनद्यासितसिंगलासित सियाईसितराजपुरुषसितवि
स्यासगर्नुद्धेन ४८ नदिलेषुयेरुधायचनारिनिरास्यरा प्रामैतरहितोराः
जानभतिचीराषुय ४९ नदिगिरकावृक्षआधारनभयाकिम्यामि मीत्रिनभ
याकोराजाधेरैवाचदेनचादेमरिजाह ४९ यद्वेसासोतप्रीतिनिगननकार
यत युतमर्थप्रयोगचयराक्षदारदर्शन ५० हेरेसमप्रितिरहोभन्यालेतिन
थोककर्मनगर्नु गुणनवेरुगनुदाननलिनुस्यामिसितयकातनगर्नु ५० न
गक्षउरुवित्वासंनक्रयाहलविग्रह आत्मनोयितथ्यक्रोधविप्रवेरिनकार्यत
५१ उरुसंगवित्वासनगर्नुथुललोफगदानगर्नुकेहिकारनमायनिरित्य

चान
४२

नरुनु धासरासितवैरिनगर्नु एतिशानिमनुषेलेछादनु ५१ जनयमित्र
राजारविषचरुधारिपति पुराजितं वार्ता बुद्धने सेवाति सदाबुद्धा ५२ म
न्यायलेजुकभयाकामेति कोराजापु रुषषस्याकि धासराणि धाभिगसंन्यासि
एतिकोसेवायैरितुतहहलेगनुछेन ५२ कर्मविनासिवित्वात्संक्रमाज्ज्योक्
तोरति कर्णनासिनीरुतिकुदेसेनासिजिवितं ५२ कर्मविहुडमित्रवित्वात्स
कुदेनैकाविसितरति कुदेनै कुदेसमावाचनुछेन एतिनिधयहा ५३ नासिसापस
दाचौरनसोचरुधारिपतौ मधेपेसुहिधं नासिपुतकालेवयनहि ५४ चोरदे
उसत्यकुदेनैव्यस्याकोई धासराछउमुचिकुदेन मातयालाकोइसामिसकुदेनजुवा

बुद्धि
४३

सि
याकोतिनिथोककुंदैन ५४ द्वैविपौविपमग्निश्चदीपागुह्योयो अंतनैवगत
वाहरस्यवृषभस्मन ५५ ज्ञानिमानिसेलेएतिथोकमाफ्वागतनजानुद्धैन ब्राह्म
णाअग्निगुह्यसिषेकोऽप्युपुह्यमहोदेवताहाएतिथोककोअन्नत्वातजानुद्धैन
५५ लोकजात्राभयलजादक्षिन्यात्पासितला यंचपत्रनविश्रतेनकुर्णोतत्रसंगति
५६ एतिपाचथोकनभयाकोदेसमावन्नुद्धैनलोकजात्राभयलजातयस्यास्या
गि एतिनभयाकोदेसमाहोदनु ५६ नाचनंसुक्रतायातिनैवकल्पवक्रसुती
नभारिस्थिरबुद्धिस्याप्रमुखसंस्कृतवरे ५७ कोहिजुगतिगत्यापनिगाजलसेतो
कुंदैन शास्त्रज्ञान्याहोउपगतकुंदैनस्वाप्तिक्षेउस्थिरबुद्धिकुंदैनमुखक्षेउविलयहुः

चान
४३

न ५७ अन्नकोसेषअग्निकोसेषव्याधिकोसेषकसेलेपनिरायनुद्धेन फेरि २४ ठि
आउछात्कारनरायनुद्धेन ५८ उदेगकलहकंडुमुनमअपराधिय नीडा
मैथुनमालस्यगुरुयत्परिवर्जित ४८ फीक्रिकलहकंन्याउनुमघयानपरशु
सं भोगतिशमैथुनमालस्यजनिउअमगर्भाउतिवर्द्ध ५२ परदारापरस्वचपरि
वादपरसेच परहासेगुरुस्थानेयततपरिवर्जय ६० अर्काकोस्वास्मिअर्काकोध
नवादगुरुक्षेत्रहास्या सतिथोकज्ञानिलेजतनगरिछादनुपद्ध ६० परोक्षकाज्य
हजारंप्रतिशेषियवादिन वअपताहसमित्रविषकुंभययोसुख ६१ शानिलोकह
हलेस्वास्मिमित्रकनछादिदिर्गकसोभन्याअर्काकोकंधारिविर्गान्या शत्रुचक्राउन्ना

७६
४४

एककलाभन्याविषकोधेलासाधिवाटडुदहाभ्याजतो ६१ कुदेसचकुर्वगिचकुः
भाज्याकुलदिताथा कुलव्यचकुभाज्याचवज्रयातपरिउतसदा ६२ कुदेसकुवृत्तिकु
कर्मकुचरित्रकुत्वाभिजनदिउअत्र एतिथोकज्ञानिजनलेखादिहलनर् ६२
उर्वसियदिरूपेनरभायादितिरोगमा गोयालमेनिकाध्ववर्गनियापरस्त्रिये ६३
उर्वसिरभातिरोगमामेरायालिमेनिका इन्हहजकोराबोभयापनिपरस्त्रियलाई
हादनुपई ६३ यचकार्यपुविद्वेषुसहप्रविसकलोदये विषतिषुमाहादोषाः
पलिवर्णविचक्षणा ६४ मनुष्येलेकार्यमानेदमानुनुरैतफलभयापनिपादो
पाषाणर् एतिविचक्षणालेखाडनु ६४ भक्ताभक्तसमायसेकार्यकार्यचनु

चान
४४

त्यगां मदाकार्यसुसंदेहाभेताव्यसर्वदाबुधे ६५ मनुष्येलेभक्तअभक्तदेहिका
र्ज्यभक्तार्ज्यगुलेगलिविचारगर्नु सवैकार्यकासंदेहविचारगलिकनगर्नुज्ञानिमनु
ष्येलेयतिगर्नु ६५ भेतव्यमकुलिनानाराजापसमिजिविनां भेतव्यज्ञानशत्रुना
हृत्कापुर्वापरनं ६६ अकुलिभयापनिअहसंगगन्यापनिभेदवुक्तिरहनुः॥
राजालेवैहिसंगसधैजाचनुसधैरहनु ६६ पादयानांभयपादपद्मानासिद्धिशिभ
या पर्वतनाभयवज्रवातजनुनाद्विपदोभयत ६७ हृषकोभयवायुपद्मकोभ
यशिशिलपर्वतकोभयवज्र जगुकोभयमनुषे ६७ सातापदिविवंदयापि
नाविकीयेतेसुत राजाकरोतिवाग्यायसरणीकालपजायते ६८ आमात्तेवि

७६
४५

षडियापद्धि वावालेय चापद्धि राजालेअन्यागयापद्धि कस्वासरनमाजानुकोर
आगर्ल ६८ यत्र राजास्य येचौरसमंत्रिसपुरोहितवाहकिंकरिष्यामि यतो रक्षा
ततोभयं ६९ गाहो देसमाभयाय निराजामंत्रिपुरोहित सर्वेचारोत्थाउमा
कागर्ग गाहो देविलक्ष्म ६९ उत्थाउमाभयमात्रि ६९ विधागालिष्टितायसे
ललातोक्षननालिका देवोपिताहिसेकोतिमालिख्यलिखितेपुन ७० विगालेक
पालमालेख्याकोअक्षर देवरेयनिमेगानुकुदेन ७० कर्मदोहिप्रधानेनवुद्धिनां
किंप्रयोजन पावानेतेजोगोवुद्धिनेन देवोभविष्येति ७१ पुरोभन्याकोकर्मवुद्धिः
लेमात्रीकाप्रयोजनधुगालेकाप्रदिगयो क्याअर्थलेदेवताहोभनिपुजागर्ग ४॥

धान
४५

११ कर्मगोहेषधानानिसलिलस्नेधुभेग्रहे वासिष्ठदलप्रजातकिंडुखभा
गिनि १२ कर्मनभयाकोअवस्यद्रुहवसिष्ठप्रविलेसुभलग्रहेरिदिनदिया
कोवेलामाशिताव्यवहारगन्याकोडुखिभया एतिकाएनलेकर्मथलोहो १३
सानुकुलेभेततस्मिदोषधिगुरासंहति गुरोपिदोषतायातिवज्जिभुतोविचात
रि १२ अकुलनिकोभयायादिदोषलेपनिनिकोद्रुह विधानाविमुखभया
यादिगुरालेपनिदोषद्रुह १२ किंकरोतिनरप्राप्तप्रक्षमानसोकर्मभिषा
रोवेवहिमुखानावुद्रिकर्मनुसारिणि १४ शानिमैविभयालेक्याप्रयोज
नद्रुकर्मलेपथायाकाथाउमानजाईकुदेन मुखकीयनियकद्रुहवुद्रिभन्या

७६
४६

काकर्मअनुसारहुनु २४ हस्तोसेसुघनदानेसनेकठसेभुघनेसुतचभुघ
नेभुत चभुघनकर्ताभुघरोकिप्रयोजन २५ हातकोगहनादानभोग
अनुकंठकोगहनासत्य कानकोगहनाधर्मसुनुगहनालायाकोक्याप्रयोजन
ह २५ चस्त्रिभुघनासुनाउमागापुष्पभुघनेस्ववृति भुघनेपुसापति
ताभुघनरूपा २६ स्वास्त्रिकोगहनासुचस्त्रिपुरुषकोगहनाफुलपुरु
षकोगहनाआक्रवृति राजाकोगहनारूपाराघने २६ नक्षत्रभुघनच
डोनारिणाभुघनेपति पृथिविभुघनेराजाशीलेसर्वत्रभुघने २७ नक्ष
त्रकोगहनाचंडमास्त्रिकोगहनास्यामि पृथिविकोगहनाराजासर्वकोगरु

चान
४६

नाशीलस्वभाव ११ गहतापरिभवश्चेन्ननिचामानुसृतमं कैसारिचरणा
घातेकालिपत्यवियुषनं १८ दुलापुरुषलेअमानेगव्यापनिनिकोहो
निचामानिस्लेपव्यापनिनिकहोकस्वभन्या श्रीकृष्णकोपाउलेकालिनागम
दनगर्हागर्दैकालिनागकोशीललेस्वभाभयोतको १८ शुचिभूमिगतंतोय
त्रेयलेयोनिविप्रति लयस्थानेयलिमेजेअन्यस्थानेशुचिशुचि १९ असुचि
वसुलेनलिप्याकोभयाभूमिमागयाकोपानिअसुचि लिप्याकोपानिह्वादिअ
रुथाउकोपानिसवैअसुचि १९ सुचिभूमिगतंतोयशुचिपुषतिवता शुचि
क्षमाकरोगासतोववास्मिताशुचि २० भूमिमाभयाकापानिसुचिपुषतिव

७६
४७

ताभयाकिस्त्रीसुचि लक्षणाभयाकोराजासुचिर्त्यतोधिभयाकोव्राह्मणसुचि ८० भ
स्मनोमुद्रागेकासेतासुप्रेनमुद्रते राजसाशुद्रतेनारिनिदिवेगेशुद्रते ८१ भस्मले
कासासुद्रकुंठअमिलालेतासासुद्रकुंठ राजभयाकिस्वास्तिशुद्रकुंठवेगलेगयाकोनदि
मुद्रकुंठ ८१ पितुरंतपुरंदयास्वपमेचक्रयिबुजेयत गोबुवातस्यसमदयास्वय
मेवक्रयोबुजेत ८२ वावारेअनपुरदिनहआमालेभात्सादिनह गाईलेआपु
समदिन्याहआपुसेतकमाउनु ८२ कपिलाक्षरपातेतवास्तिरारामनेनच वेदाक्ष
रविचारेनसमुद्रानरेकेवज्र ८२ कपिलागाईकाउदयायाघडिवास्तिरालेग
सनगयापहि वेदपयायनगयायाहिपोमुद्रनरेकवासपली ८३ मुद्रहत्तेन

चान
४७

यो मुक्तीमासमेकं भयतरं जिवमानो भवेत् शुद्धी मृतत्वा न भययायेते ८४ शुद्धका
हातलेजु यथास्मरणे एकमहिना संमया इव स्यापदि तेषां स्मरणजीवकं ग्याल शुद्धम
यो भन्यापदि कुरु कुरु ८४ स्नानहिना गुयानारि घृतहिननुभोजनं वस्त्रहिने म
रकारे विद्याहिन विजोतम ८५ उर्जनभया किं स्त्री घितनभया को भोजनमालिन
वसुला उन्वाला ईगहना विद्याहिनभया किं वास्मरा सति स्वभाव ईहेन ८५ शो
भाय शरिरे पद्मशोभते दिवतो दिज शोभते तपसा युक्ते वस्त्रा शृरश्च शोभते ८५
पानिको क मलको फूल शोभा ईहे स्नानिभया को वास्मरा शोभा ईहे तपस्यालेजु क
भया को शोभा ईहे घाउले सुराभया को शोभा ईहे ८६ गरा सर्वच विपारां मुखां

पुत्रि
४८

नोकलपिहं पुरुषात्सवचनगारिणांगवाचैवतरोत्तम ८७ ब्राह्मणकोउतम
जसगर्नुमृषकोउतमकलह स्वास्त्रिकोउतमपुरुषगाईकोउतमघास ८७ अग्नि
होत्रफलचैवशीलवृत्तिफलमुत रतिपुत्रफलनारिद्वमुत्रफलीधनं ८८ वेद
ज्ञान्याकोलअग्निहोत्रशास्त्रज्ञान्याकोफलशीलवृत्तिनिकोगर्नु स्त्रीपुत्रेगगन्याकोफल
पुत्रगुल्याउनुधनभयाकोफलदानगनुभोगगर्नु ८८ अग्निदेहगितार्थनसुच्या
देहतिरश्मी राजादेहंतिउरुतेनतयसाब्रह्मणोदेहेत् ८९ अग्निलेदाहगर्हंनताप
लेमुज्यलेदाहगर्हं किरणोराजालेदाहगर्हं ब्राह्मणाले १० तपस्यालेदाहगर्हं ८९
सनसाकभनमासकरेनमथितदधि तर्जन्यापहृदचगुलेगोमांसभेक्षणी ९०

चान
४८

शातशाकसुसैमन्पामासुहातेलेमथनगन्थाकोदहि तर्जनीलेदतिवतगन्थाकोगाई
कोमासुवायातुले २० नरुन्धात्रमातिद्व्याधन्यमात्रदृश्यते नयसैकापलितपत्र
भक्षमासुजुधिस्थिर २१ आपुलेमारुनैछैनअरुलेमात्राकोपनिहरुनैछैन
हेजुधिस्थिररुतिनिथोकसैवाछाडिकनमासुवायाकोपापछैनमासुवायाकोछैन
नमममवायादोषछैन मैथुनगन्थाकोदोषपनिछैनरुतिप्राणिकोवृत्तिगर्नैरुति
गन्थाकोफलभयामहाफलहुँछ २१ नमासभसेनेदोषनममममचमैथुन
पुस्ततिरेवकर्मव्यतिवृत्तिमहाफली २२ मासुवायाकोममपानगन्थाकोमै
थुनगन्थाकोपापलागैछैन तत्कोभन्यापनिथोकछायापडितवमहापुरुषहुँ

उद्धि
४८

२१ चतुरसागरपर्यन्तायादशानेष्टथिविमां नषादेष्टापियोमासंजुलेमेतद्धि
उद्धा २२ चारसुमुडकोमधेमाभयाकोष्टथिविदानगन्याकोपुणपरमासुनवा
याकोपुणपुलेह भनिशानियेणितहहलेभन्याकोह २३ अग्निपराष्ट्रियो
सुर्वसर्पराजकुरानिच निपमेवोपाचारेनसप्रपारापरातिषट् २४ अंगा
पानिस्त्रीसुर्वसर्पराजास्यतिथोकलेनितेउपडवलेपाराणिकोनासगहने २४
भुक्कमाससुयौरुद्रावौलार्कसारुन्यदधि प्रभापमेथुननिडासप्रपाराहरानि
यत् २५ सुक्काकोमासुवुठिस्थाम्निविहानकाश्रीसुर्गपतरुणादेहिव्यसासुसं
भोगसुकला सतिहथोकलेपाराणिकोनासगह २५ मयमांसंष्टतसप्रह

चान
४८

वालसुखीरभोजनी उन्नोदकतह्वायासप्रवाणकणारिषत् २५ सममासुसप्र
घेउवालस्यकैन्पाउदरमातवानुतातोपानि ह्रस्वकोह्यायस्तिह्रथोकलेपारिषाकोर
होगर्हन् २६ अत्रदष्टगुणपृष्टपिष्टदष्टगुणपय माष्टगुणामासमासा
दष्टगुणघृत् २७ अनेदेषिआथगुणारोतिःरोतिदे।षिआथगुणउद उददे
षिआथगुणामासुमासुदे।षिआथगुणघेउकोह्र २७ पंचद्विषविनस्यति
तधोलुधश्चयेनर आगेमानिश्चमामिचगुरुदे।षितथैवच २८ स्तिपाचज
नाकोचादेनासिंह ह्रथिःरोभिःतमकारि ।दिनाहारिगुरुदे।षिनिशयतिथोकचा
देनासिंह २८ गोविषैश्चदेवैश्चसतिभिसत्पवादिभिः भलुवेदीनशीलेश्चः

५०

सप्तभिदायोमहि ९९ गार्वाक्षस्य वेदस्योत्पत्तिरिति अलोभिदाताशीलवृ
त्त एतिसाधुशोकलेख्यविधिरनगरितव्याकोट ९९ असारेपिहसमा
लेसालेमेताभ्यनुदयमु कात्यायासासनासंगोगीगाशीनुपूजनं १०० तिसै
सारसैसारमासालभन्याकोचारथोकट्ट कासिवासगर्नुसत्यपुह्वसंगग
र्नुगीगास्नानगर्नुसैनुपुजागर्नु १०० ॥ २०० ॥ ॥ २५६ ॥
इति श्रीबुद्धिचानके सारसंग्रहेऽष्टमोऽध्यायस्तत्कस्यैवार्णसमाप्तम् २००
शुभम् ॥ ६६३ ॥ ॥ ॥

आशा सरुका
2368
ASHA ARCHIVES

चान
५०